वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 368
ISBN-978-93-82071-48-8

अकृत्रिम वृक्षों पर जिनमंदिर

–संकलनकर्त्री–

**जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी**

शरदपूर्णिमा महोत्सव-2012, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 61वें त्यागदिवस के अवसर पर घोषित चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 के अन्तर्गत भगवान ऋषभदेव शासन जयंती (केवलज्ञानकल्याणक) के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2539	मूल्य
1100 प्रतियाँ	फाल्गुन कृ. ग्यारस, 7 मार्च 2013	16/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–स्वस्तिश्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

आठ कोटि छप्पन सुलक्ष, सत्तानवे हजार चार शतक।
इक्यासी जिनगृह अकृत्रिम, मनवचतन से नमूँ सतत।।

"स्वाध्यायः परमं तपः" आचार्यों ने कहा है—स्वाध्याय परम तप है। शास्त्र स्वाध्याय से ज्ञान की वृद्धि होती है, नई-नई बातों का ज्ञान होता है और परम आनन्द का अनुभव होता है। शास्त्र स्वाध्याय की एक विशेष बात यह भी है कि जिसका चित्त स्वाध्याय में लग जाता है उससे अन्य परपंच स्वयं दूर हो जाते हैं।

आज इस भौतिक गुण में बड़े-बड़े प्राचीन ग्रन्थों को पढ़ने के लिए श्रावकों के पास समय नहीं है अतः परम पूज्य चारित्र चन्द्रिका गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी प्राचीन शास्त्रों से मक्खनरूप विशेष अमृततुल्य ज्ञान को निकालकर हम सभी को प्रदान कर रहीं हैं। आज ९० प्रतिशत लोग तो इस अकृत्रिम रचना के बारे में जानते भी नहीं है, कि तीनलोक क्या है ? जम्बूद्वीप क्या है ? तेहरद्वीप क्या है ? एक अकृत्रिम वृक्ष के एक लाख चालीस हजार एक सौ उन्नीस परिवार वृक्ष हैं और जितने वृक्ष हैं उतने ही उनके ऊपर जिनमंदिर हैं। यह सभी वृक्ष पृथ्वीकायिक हैं, रत्नों से निर्मित हैं। जो कि आज भी इस जम्बूद्वीप के अन्दर विद्यमान हैं, लेकिन हम और आपको नहीं दिखते हैं। क्योंकि हमारे पास वहाँ तक जाने की शक्ति नहीं है। यहाँ से २० करोड़ मील की दूरी पर सुमेरु पर्वत है।

३०० ग्रंथों की लेखिका, सरस्वती की प्रतिमूर्ति पूज्य माताजी का जैनसमाज पर जो उपकार है उसे कभी भी विस्तृत नहीं किया जा सकता। तीनलोक में ८ करोड़, ५६ लाख, ९७ हजार, ४८१ अकृत्रिम जिनमंदिर हैं और इन सभी जिनमंदिरों में १०८-१०८ जिनप्रतिमाएँ हैं जिनकी संख्या पूज्य माताजी ने लिखी है—

नव सौ पचीस कोटि त्रेपन, लाख सत्ताइस सहस प्रमाण।
नव सौ अड़तालिस जिन प्रतिमा, शिव सुख हेतु करूँ प्रणाम।।

पूज्य माता जी को करणानुयोग के शास्त्रों से विशेष अनुराग है। वे प्रतिदिन स्वयं उसका स्वाध्याय कर और उसके महत्त्वपूर्ण विषयों को लिखकर हम सभी लोगों को करणानुयोग के शास्त्रों का अध्ययन करने की प्रेरणा प्रदान कर रही हैं।

इस पुस्तक को पढ़कर सभी भव्य जीव अकृत्रिम-कृत्रिम जिनमंदिरों की जिनप्रतिमाओं की वन्दना का पुण्य लाभ प्राप्त करें। और यह भावना करें कि हमें भी शीघ्र ही इन अकृत्रिम रचनाओं के साक्षात् दर्शन का सुअवसर प्राप्त हों। पूज्य माता जी चिरायु हों, स्वस्थ हों, और इसी तरह से जिनागम की नई-नई बातों का हम सभी को ज्ञान प्राप्त कराती रहें, यही मंगल भावना है।

आद्य वक्तव्य

–गणिनी ज्ञानमती

असंख्यात द्वीप समुद्रों के प्रारम्भ में सर्वप्रथम द्वीप जंबूद्वीप है। यह एक लाख योजन विस्तृत है आगे के समुद्र-द्वीप दूने-दूने विस्तार वाले होते गए हैं। जैसे कि जंबूद्वीप एक लाख योजन विस्तृत गोल थाली के समान है व उसे घेरकर लवण समुद्र दो लाख योजन विस्तृत है।

जंबूद्वीप में दक्षिण से लेकर हिमवान, महाहिमवान, निषध, नील, रुक्मी और शिखरी ये छह कुलाचल—पर्वत हैं। इनके मध्य में भरत, हैमवत, हरि, विदेह, रम्यक, हैरण्यवत और ऐरावत ये सात क्षेत्र हैं। इन छह पर्वतों पर क्रम से पद्म, महापद्म, तिगिंछ, केसरी, महापुण्डरीक, और पुण्डरीक ऐसे छह सरोवर हैं। इन सरोवरों से गंगा-सिंधु, रोहित्-रोहितास्या, हरित्-हरिकांता, सीता-सीतोदा, नारी-नरकांता, सुवर्णकूला-रूप्यकूला और रक्ता-रक्तोदा, नाम से चौदह नदियाँ निकली हैं जो कि नीचे भरत, हैमवत आदि सात क्षेत्रों में क्रम से, दो-दो बहती हुई लवणसमुद्र में प्रवेश करती हैं। छह सरोवरों में से पद्म सरोवर से गंगा-सिन्धु और रोहितास्या ये तीन नदी तथा अंतिम पुण्डरीक सरोवर से तीन नदियाँ एवं मध्य के चार सरोवरों से दो-दो नदियाँ निकलती हैं।

विदेह क्षेत्र के ठीक मध्य में सुमेरु पर्वत है। उसके दक्षिण व उत्तर में देवकुरु-उत्तरकुरु हैं। तथा पूर्व व पश्चिम में विदेह क्षेत्रों में शाश्वत कर्मभूमियाँ हैं।

भरत क्षेत्र तथा ऐरावत क्षेत्र के आर्यखंड में कर्मभूमि हैं। यहाँ दोनों जगह षट्काल-परिवर्तन होने से वर्तमान में यहाँ भरतक्षेत्र में पांचवाँ काल चल रहा है।

हैमवत व हैरण्यवत क्षेत्र में जघन्य भोगभूमि, हरिक्षेत्र व रम्यकक्षेत्र में मध्यम भोगभूमि तथा उत्तरकुरु व देवकुरु में उत्तम भोगभूमि है। यहीं उत्तरकुरु में ईशान में जंबूवृक्ष हैं व देवकुरु में नैऋत्य में शाल्मली वृक्ष हैं।

इसी प्रकार धातकीखण्ड व पुष्कारार्धद्वीप में दक्षिण-उत्तर में इष्वाकार पर्वत से दो-दो खण्ड हो जाने से दो भरत, दो विदेह, दो मेरु आदि हो गए हैं। अतः वहाँ धातकी व शाल्मली दो-दो वृक्ष तथा पुष्करार्ध में पुष्करवृक्ष व शाल्मलीवृक्ष दो-दो होने से ये दश मुख्य वृक्ष हैं। इनमें दशों वृक्षों की एक-एक शाखा पर एक-एक अकृत्रिम जिनमंदिर हैं। मध्यलोक के ४५८ अकृत्रिम जिनमंदिरों में इन दश मंदिरों की गणना है। तथा इन वृक्षों के परिवार वृक्षों में परिवार देवों के भवनों में जो उतने ही जिनमंदिर हैं उनकी गणना व्यंतर देवों के असंख्यात मंदिरों के अन्तर्गत होती है यह बात आपको ध्यान में रखना है।

इन सब जिनमंदिर व जिनप्रतिमाओं को कोटि-कोटि नमन।

प्रस्तावना

–आर्यिका सुव्रतमती (संघस्थ)

श्री वर्धमान देवं, त्रिलोकवंद्यं त्रिशुद्धितः प्रणिपत्य।
त्रिभुवन जिनभवनानि, प्रतिमाश्चापिस्तुवे त्रिविधमल हान्ये।।१।।

लोक के तीन भेद हैं—अधोलोक, मध्यलोक और ऊर्ध्वलोक। अधोलोक में मुख्य रूप से नरक हैं, जहाँ नारकी लोग रहते हैं। मध्यलोक में मनुष्य और तिर्यंच रहते हैं और ऊर्ध्वलोक में स्वर्ग हैं, जहाँ देव लोग रहते हैं।

मध्यलोक में असंख्यातों द्वीप, समुद्र हैं। सबसे पहला द्वीप जम्बूद्वीप है, उसके बाद लवण-समुद्र है, फिर दूसरा द्वीप धातकीखण्डद्वीप है जिसमें इष्वाकार पर्वत के होने से पूर्वधातकीखण्ड और पश्चिमधातकीखण्ड ऐसे दो भाग हो जाते हैं। धातकीखण्डद्वीप को घेरे हुए कालोदधि समुद्र है, फिर पुष्करार्धद्वीप है, जोकि मानुषोत्तर पर्वत के पड़ने से आधा ही है इसमें भी इष्वाकार पर्वत के निमित्त से पूर्व पुष्करार्ध द्वीप एवं पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप ऐसे दो भाग हो जाते हैं। यहाँ तक ढाईद्वीप कहलाता है और यहीं ढाईद्वीप के अन्दर ही मनुष्य रहते हैं, इसके आगे के द्वीपों में मनुष्य नहीं हैं और ढाई द्वीप से आगे नहीं जा सकते हैं। आगे तिर्यंच जीव ही रहते हैं।

तेरह द्वीप तक ४५८ अकृत्रिम जिनमंदिर हैं। जिनकी गणना इस प्रकार हैं—पाँच मेरु के ८० जिनालय, कुलाचल के ३०, रजताचल यानि विजयार्ध पर्वत के १७०, वक्षार पर्वत के ८०, गजदंत पर्वत के २०, जंबू-शाल्मली वृक्ष के १०, इष्वाकार पर्वत के ४, मानुषोत्तर पर्वत के ४, नंदीश्वर द्वीप के ५२, कुण्डलवर पर्वत के ४, रुचकवर पर्वत के ४, इस प्रकार सब मिलाकर ४५८, अकृत्रिम जिनमंदिर हैं।

इस "अकृत्रिम वृक्षों पर जिनमंदिर" पुस्तक में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने त्रिलोकसार, तिलोयपण्णत्ति, जंबूद्वीपपण्णत्ति, लोकविभाग, तत्त्वार्थवार्तिक आदि अनेक ग्रंथों का अध्ययन करके जम्बूवृक्ष, शाल्मली वृक्ष आदि वृक्षों की परिवार संख्या को निकाला है। जितने इनके परिवार वृक्ष हैं उतने ही जिनमंदिर हैं। जिनका विस्तार से इस पुस्तक में पूज्य माता जी ने वर्णन किया है। "त्रैलोक्य चैत्यवन्दना" में पूज्य माताजी ने समस्त अकृत्रिम-कृत्रिम जिनालयों की वन्दना की है। जम्बू-शाल्मली आदि वृक्षों की वंदना करते हुए लिखा है-

जंबू-शाल्मली दश वृक्षों की, शाखाओं पर दश मन्दिर।
केतु विजयि जिनकी प्रतिमा को, वंदूँ सदा भाव शुचिकर।।

पूज्य माता जी ने जैनभूगोल अर्थात् जम्बूद्वीप रचना, तेरहद्वीप की रचना एवं तीनलोक की रचना को धरती पर साकार कराकर सभी को इनके दर्शन, वन्दन का लाभ प्रदान किया है। जिनकी वाणी का एक-एक शब्द जिनवाणी है। जिनागम का ज्ञान किस तरह से लोगों तक पहुँचा सकूँ, इसके लिए पूज्य माताजी प्रतिक्षण उद्यमशील रहती हैं। पारस चैनल, इन्टरनेट आदि के माध्यम से पूज्य माताजी चारों अनुयोगों का तलस्पर्शी ज्ञान प्रदान कर रही हैं, यह हम सभी पर राष्ट्रगौरव, वाग्देवी, डबल डी. लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत पूज्य माता जी का महान उपकार है। पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मतिथि—आसोज सुदी १५ (शरदपूर्णिमा) वि. सं. १९९१, (२२ अक्टूबर सन् १९३४)
जाति—अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**—गोयल, **नाम**—कु. मैना
माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् १९५२, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन
क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. १, ई. सन् १९५३ को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम—क्षुल्लिका वीरमती
आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. २, ई. सन् १९५६ को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती १०८ आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।
साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग ३०० ग्रंथों की लेखिका।
डी.लिट्. की मानद उपाधि—सन् १९९५ में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा ८ अप्रैल २०१२ को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।
तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा—भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ परतीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की ३१-३१ फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन १०८ फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की शिाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ इत्यादि।
महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से २१ दिसम्बर २००८ को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**
शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।
रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (१९८२ से १९८५), समवसरण श्रीविहार (१९९८ से २००२), महावीर ज्योति (२००३-२००४) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

—जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)

ईसवी सन् १९७२ में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित उक्त संस्था के द्वारा जम्बूद्वीप रचना के निर्माण हेतु मेरठ (उ.प्र.) के ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में नशिया मार्ग पर जुलाई १९७४ में एक भूमि क्रय की गई, जहाँ सर्वप्रथम २४वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण सात हाथ (सवा दस फुट) ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान करने हेतु फरवरी १९७५ में एक लघुकाय जिनालय का निर्माण किया गया, जो सन् १९९० में एक अनोखे 'कमल मंदिर' के रूप में निर्मित हुआ है। यहाँ विराजमान कल्पवृक्ष भगवान महावीर से यह अतिशय क्षेत्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होता हुआ नित्य नये निर्माणों के द्वारा संसार में अद्वितीय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध हुआ है। इस प्रतिमा के दर्शन करके भक्तगण अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

जम्बूद्वीप निर्माण का प्रथम चरण—जुलाई सन् १९७४ में रखी गई नींव के आधार पर जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में सर्वप्रथम आगम वर्णित सुमेरुपर्वत (१०१ फुट ऊँचा) का निर्माण अप्रैल सन् १९७९ में एवं सन् १९८५ में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण पूर्ण हुआ। सोलह जिनमंदिरों से समन्वित उस सुमेरुपर्वत के अंदर से निर्मित १३६ सीढ़ियों से चढ़कर श्रद्धालु भक्त समस्त भगवन्तों के दर्शन करके जब सबसे ऊपर पाण्डुकशिला के निकट पहुँचते हैं, तो नीचे जम्बूद्वीप रचना के सभी नदी, पर्वत, मंदिर, उपवन आदि दृश्यों के साथ-साथ हस्तिनापुर के आसपास के सुदूरवर्ती ग्रामों का भी प्राकृतिक सौंदर्य देखकर फूले नहीं समाते हैं।

यात्री सुविधा—हस्तिनापुर तीर्थ में जम्बूद्वीप स्थल के पूरे परिसर में संस्थान द्वारा कार्यालय का सक्रिय संचालन किया जाता है। वहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु आधुनिक सुविधायुक्त २०० कमरे, ५० से अधिक डीलक्स फ्लैट एवं अनेकों गेस्ट हाउस (बंगले) बने हुए हैं। इसके साथ ही यहाँ सुन्दर भोजनालय है जहाँ यात्रियों को सुविधापूर्वक शुद्ध भोजन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त २ किमी. दूर हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन में सरकारी अस्पताल, डाकखाना, बाजार, इंटरकालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थाएँ आदि सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

हस्तिनापुर कैसे पहुँचे ?—भारत की राजधानी दिल्ली से ११० किमी. पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जिला-मेरठ से ४० किमी. दूर हस्तिनापुर तीर्थ है। राजधानी दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए अंतर्राज्यीय बस अड्डे अथवा आनंद विहार बस अड्डे से उत्तरप्रदेश रोडवेज तथा डी.टी.सी. बसों की निरंतर सेवा उपलब्ध है। मेरठ से भी प्रति आधे घंटे के अंतराल से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पहुँचने हेतु रोडवेज की बसें सुलभता के साथ उपलब्ध रहती हैं। 'जम्बूद्वीप' के नाम से ये बसें चलती हैं जो सीधे जम्बूद्वीप के सामने ही रुकती हैं और जम्बूद्वीप से ही मेरठ, दिल्ली, तिजारा आदि यात्रा हेतु बसें उपलब्ध रहती हैं। दिल्ली और मेरठ के बीच रेल सेवा भी है। देश-विदेश के यात्रीगण हस्तिनापुर पधारकर इस धरती का स्वर्ग मानी जाने वाली 'जम्बूद्वीप रचना' के दर्शन करें और मानसिक शांति का अनुभव करते हुए मनवांछित फल प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

विषय सारणी

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
१.	जम्बूवृक्ष शाल्मलीवृक्ष जिनालय वन्दना	१
२.	मंगलाचरण	३
३.	जम्बूद्वीप में जम्बूवृक्ष पर जिनमंदिर	५
४.	जम्बूद्वीप में शाल्मलीवृक्ष पर जिनमंदिर	१०
५.	जम्बूवृक्ष एवं शाल्मली वृक्षों पर जिनमंदिर	११
६.	जम्बूद्वीप में जम्बूवृक्ष एवं शाल्मली वृक्ष की परिवार वृक्षों सहित संख्या	३६
७.	धातकीवृक्ष शाल्मलीवृक्ष जिनालय वन्दना	३७
८.	धातकीखण्ड द्वीप में धातकी एवं शाल्मली वृक्षों पर जिनमंदिर	३८
९.	धातकीखण्ड द्वीप में धातकी एवं शाल्मली वृक्षों की परिवार वृक्षों सहित संख्या	४१
१०.	जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड द्वीप एवं पुष्करार्धद्वीप में स्थित भरतादि क्षेत्रों के विस्तार का चार्ट	४१
११.	पुष्करवृक्ष शाल्मलीवृक्ष जिनालय वन्दना	४४
१२.	पुष्करार्धद्वीप में पुष्कर वृक्ष एवं शाल्मली वृक्षों पर जिनमंदिर	४६
१३.	पुष्करार्धद्वीप में पुष्करवृक्ष एवं शाल्मली वृक्ष के परिवार वृक्षों सहित संख्या	४६
१४.	ढाईद्वीप के वृक्षों की संख्या	४७
१५.	प्रशस्ति	४८

अकृत्रिम वृक्षों पर जिनमंदिर

(त्रिलोकसारादि ग्रन्थों के आधार से)

जम्बूवृक्ष शाल्मलीवृक्ष जिनालय वन्दना

गीताछन्द

गिरि मेरु के उत्तर दिशी उत्तरकुरु शोभे अहा।
उसमें सुदिक् ईशान के जंबूतरू राजे महा।।
दक्षिण दिशा में देवकुरु नैऋत्य कोण सुहावनी।
तरु शाल्मलि शुभरत्नमय, सुन्दर दिखे शाखाघनी।।१।।

–सोरठा–

तरु की शाखा मांहि, रत्नमयी जिनबिंब हैं।
नमूं नमू तिहुंकाल, भक्ति भाव से मैं सदा।।१।।

–नरेन्द्र छंद–

जंबूतरु का स्वर्णिम स्थल, पांच शतक योजन है।
इस थल का परकोटा कांचन–मयी मनो मोहन है।।
पीठ आठ योजन का ऊँचा, मध्य माहिं चांदी का।
इस पर जम्बूवृक्ष अकृत्रिम, पृथ्वीमय रत्नों का।।२।।
यह तरु तुंग आठ योजन है, वज्रमयी जड़ जानो।
मणिमय तना हरित मोटाई, एक कोश परमानो।।

तरु की चार दिशाओं में हैं, चार महाशाखायें।
छह योजन की लंबी इतने, अंतर से लहरायें।।३।।
मरकत कर्केतन मूँगा, कंचन के पत्ते उत्तम।
पांच वर्ण रत्नों के अंकुर, फल अरु पुष्प अनूपम।।
इसमें फल जामुन सदृश हैं, कोमल चिकने दिखते।
रत्नमयी हैं फिर भी अद्भुत पवन लगत ही हिलते।।४।।
उत्तर शाखा पर जिन मंदिर, सुरगृह त्रय शाखा पे।
सम्यक्त्वी आदर व अनादर, व्यंतर रहते उनपे।।
तरु को चारों तरफ घेर कर, बारह पद्म वेदियाँ।
उनके अंतराल में तरु की, परिकर वृक्ष पंक्तियां।।५।।
एक लाख चालीस हजार इक सौ उन्नीस कहाएं।
इन जंबू परिवार वृक्ष पर, सुर परिवार रहायें।।
मेरू की ईशान दिशा में नीलाचल के दाएं।
माल्यवन्त के पश्चिम में, सीता के पूर्व कहाएं।।६।।
तरु स्थल के चारों तरफे, त्रय वन खंड कहाते।
फल फूलों युत सुरमहलों युत, जल वापी युत भाते।।
इस द्रुम के जिनगृह में इक सौ–आठ जिनेश्वर प्रतिमा।
इसी तरह शाल्मली वृक्ष की जानो सारी रचना ।।७।।
शाल्मलि तरु के अधिपति व्यंतर, वेणु वेणुधारी हैं।
ये सुर सम्यक्त्वी जिन मत के, प्रेमी गुणधारी हैं।।
जितने जंबू शाल्मलि तरु हैं, उतने जिन मंदिर हैं।
क्योंकि सभी पर सुर रहते हैं सबमें जिन मंदिर हैं।।८।।
दो चैत्यालय मुख्य अकृत्रिम, हैं स्वतन्त्र दो तरु के।
उनकी अरु सब जिन प्रतिमा की, करूँ वंदना रुचि से।।
सुर किन्नरियां नित गुण गातीं वीणा की लहरों से।
दर्शन करके नर्तन कीर्तन करतीं भक्ति स्वरों से ।।९।।

जय जय जिन प्रतिमा अद्भुत महिमा पढ़े सुने जो गुण गावें।
जय 'ज्ञानमती' श्री सिद्धिवधू प्रिय सो नर सुखसम्पत्ति पावें ।।१०।।

मंगलाचरण

जंबूवृक्षादिशाखासु, परिवारद्रुमेष्वपि।
जिनालया जिनार्चाश्च, तांस्ता नौमि शिवाप्तये।।१।।

शंभु छंद

जंबूवृक्षादिक दश तरु हैं, इनके परिवार वृक्ष भी हैं।
छत्तीस लाख तेतालिस सहस, एक सौ बीस सर्व तरु हैं।।
दशतरु में अकृत्रिम मंदिर, परिवारवृक्ष में देवभवन।
इस सब में जिनगृह जिनप्रतिमा, इन सबको मैं नित करूँ नमन।।२।।

जंबूद्वीप में बीचों बीच में सुदर्शनमेरु पर्वत है। इसके दक्षिण और उत्तर में देवकुरु और उत्तरकुरु नाम से दो उत्तम भोगभूमि हैं। पूर्व और पश्चिम में विदेह क्षेत्र हैं।।

उत्तरकुरु भोगभूमि में जंबूवृक्ष है। यह अनादिनिधन पृथ्वीकायिक रत्नमयी है। फिर भी इनके पत्ते रत्नमयी होते हुए भी हवा के झकोरे से हिलते हैं। इस वृक्ष की बड़ी-बड़ी चार शाखाएँ हैं। इस जंबूवृक्ष की उत्तर की शाखा पर अकृत्रिम जिनमंदिर है।

जंबूद्वीप में अकृत्रिम जिनमंदिर अठत्तर हैं। उन्हीं में इनकी गणना है। इसके चारों ओर बारह वेदिकाओं के अंतराल में जंबूवृक्ष के परिवार वृक्ष हैं। इन वृक्षों में भी शाखाओं पर देवों के भवन बने हुए हैं उनके गृहों में भी जिनमंदिर हैं, अतः एक जंबूवृक्ष के परिवार वृक्ष १,४०,११९ हैं तो उतने ही व्यंतर देवों के गृह में जिनमंदिर हैं। इसी प्रकार 'देवकुरु' भोगभूमि में शाल्मली वृक्ष है। उसका भी वर्णन इसी के समान है। इनके प्रमुख व्यंतर देवों के नाम आदरदेव एवं अनादरदेव हैं।

धातकीखण्ड में धातकी-धात्री अर्थात् आंवले के वृक्ष हैं। धातकीखंड में दक्षिण-उत्तर में इष्वाकार पर्वत के निमित्त से पूर्वधातकी एवं पश्चिमधातकी ऐसे दो भेद हो गए हैं। पूर्वधातकीखंड में विजयमेरु व पश्चिमधातकी खंड में अचलमेरु पर्वत हैं। अतः वहाँ दो धातकीवृक्ष व दो शाल्मली वृक्ष हैं। इनके परिवार वृक्षों की संख्या दूनी-दूनी है।

इसी प्रकार पुष्करार्धद्वीप में दक्षिण-उत्तर में इष्वाकार पर्वत के निमित्त से पूर्व पुष्करार्ध व पश्चिमपुष्करार्ध ऐसे दो खंड हो गए हैं। इनमें भी मंदरमेरु व विद्युन्मालीमेरु पर्वत हैं। वहाँ पर भी उत्तरकुरु व देवकुरु भोगभूमि में पुष्करवृक्ष व शाल्मलीवृक्ष हैं। धातकीवृक्ष से वहाँ के वृक्ष के परिवार वृक्ष दूने-दूने हो गए हैं।

इस प्रकार— १. जंबूवृक्ष, २. शाल्मलीवृक्ष, ३. धातकीवृक्ष, ४. शाल्मलीवृक्ष, ५. धातकीवृक्ष, ६. शाल्मलीवृक्ष, ७. पुष्करवृक्ष, ८. शाल्मलीवृक्ष, ९. पुष्करवृक्ष व

१०. शाल्मलीवृक्ष। इन दस वृक्षों की एक-एक शाखा पर अकृत्रिम जिनमंदिर हैं। इनकी संख्या मध्यलोक के ४५८ अकृत्रिम मंदिरों में आ जाती हैं। तथा इनके जो परिवार वृक्ष हैं उन पर जो परिवार देव रहते हैं। उनके भवनों में जो जिनमंदिर हैं, उनकी गणना व्यंतरदेवों के जिनमंदिरों में आती हैं। इस बात का हमें और आपको ध्यान रखना है।

जंबूवृक्ष की उत्तर शाखा पर मंदिर है। शेष तीन दिशाओं की शाखाओं पर आदर और अनादर नाम के व्यंतर देवों के भवन हैं। परिवार वृक्षों में इन्हीं देव के परिवार देव हैं । 'सिद्धांतसारदीपक' आदि ग्रन्थों में जंबूवृक्ष का स्वामी अनावृत नाम का व्यंतर देव माना है। शाल्मलीवृक्ष की दक्षिण शाखा पर सिद्धायतन-जिनमंदिर है। व शेष तीन दिशा की शाखाओं पर वेणु एवं वेणुधारी देव रहते हैं। परिवार वृक्षों में इन्हीं देवों के परिवार देव रहते हैं। इसी प्रकार धातकीवृक्ष व शाल्मलीवृक्ष के अधिपति प्रियदर्शन व प्रभास नाम के व्यंतर देव हैं। पुष्करार्धद्वीप में पुष्करवृक्ष व शाल्मलीवृक्षों के अधिपति व्यंतर देव हैं। इनके नाम पद्म व पुण्डरीक हैं। इन वृक्षों की उत्तर व दक्षिण शाखा पर जिनमंदिर तथा शेष तीन शाखाओं पर एवं परिवार वृक्षों पर व्यंतर देव रहते हैं।

इन वृक्षों के पत्ते-पत्ते या डाल-डाल पर भगवान की प्रतिमाएँ नहीं हैं यह बात ध्यान में रखना है।

इन सभी दश सिद्धायतन अकृत्रिम जिनमंदिरों को उनमें विराजमान प्रतिमाओं को मेरा कोटि-कोटि नमस्कार होवे। तथा ढाई द्वीप के इन दश वृक्षों की तथा परिवारवृक्षों के देवभवनों की कुल संख्या छत्तीस लाख तेतालिस हजार एक सौ बीस है उनमें से दश घटाकर शेष ३६,४३,११० परिवार वृक्षों के जिनमंदिर, और जिनप्रतिमाओं को भी मेरा कोटि-कोटि नमस्कार होवें।

जम्बूद्वीप में जम्बूवृक्ष पर जिनमंदिर

(त्रिलोकसार ग्रंथ से[१])

णीलसमीवे सीदापुव्वतडे मंदराचलीसाणे।
उत्तरकुरुम्हि जंबूथली सपंचसयतलवासा।।६३९।।
नीलसमीपे सीतापूर्वतटे मन्दराचलैशान्यां।
उत्तरकुरौ जम्बूस्थली सपञ्चशततलव्यासा।।६३९।।

णील । नीलगिरेः समीपे सीतानद्याः पूर्वतटे मन्दराचलस्यैशान्यां दिशि उत्तरकुरौ पञ्चशतयोजनतलव्यासा जम्बूवृक्षस्थल्यस्ति ।।६३९।।

अंते दलबाहल्ला मज्झे अट्ठुदय वट्ट हेममया।
मज्झे थलिस्स पीठीमुदयतियं अट्ठबारचऊ।।६४०।।
अन्ते दलवाहल्या मध्ये अष्टोदया वृत्ता हेममया।
मध्ये स्थल्याः पीठमुदयतियं अष्टद्वादशचतुः।।६४०।।

अंते । सा च पुनरन्ते दल १/२ योजनबाहल्या मध्येष्टयोजनोदया वृत्ताकारा हेममयी स्यात् ।तत्स्थलीमध्येऽष्टयोजनोदयं द्वादशयोजनभूव्यासं चतुर्योजनमुखव्यासं पीठमस्ति ।।६४०।।

तत्थलिउवरिमभागे बाहिं बाहिं पवेढिऊण ठिया।
कंचणवलयसमाणा बारंबुजवेदिया णेया।।६४१।।
तत्स्थल्युपरिमभागे बहिर्बहिः प्रवेष्ट्य स्थिताः।
काञ्चनवलयमानाः द्वादशाम्बुजवेदिकाः ज्ञेयाः।।६४१।।

जम्बूद्वीप में जम्बूवृक्ष पर जिनमंदिर

गाथार्थ— नील कुलाचल के समीप, सीता नदी के पूर्व तट पर सुदर्शन मेरु की ईशान दिशा में उत्तरकुरुक्षेत्र में जम्बूवृक्ष की स्थली है जिसका तलव्यास पाँच सौ योजन है ।।६३९।।

गाथार्थ :— वह स्थली अन्त में आधा योजन ऊँची,बीच में आठ योजन ऊँची , गोल आकार वाली और स्वर्णमयी है। उसके बीच में आठ योजन ऊँचा , बारह योजन भूव्यास एवं चार योजन मुखव्यास वाला एक पीठ या पीठिका है।।६४०।।

गाथार्थ :—उस स्थली के उपरिम भाग में बारह बारह एक दूसरे को वेष्टित करती हुई स्वर्ण वलय सदृश आधे योजन ऊँची और ऊँचाई के आठवें भाग प्रमाण अर्थात् १/१६ योजन चौड़ी बारह अम्बुज वेदिकाएँ हैं ।।६४१।।

---

१. त्रिलोकसार ग्रन्थ पृ. ५३४ से ५३७ तक।

तत्थलि । तत्स्थल्युपरिमभागे बहिर्बहिः प्रवेष्ट्य काञ्चनवलयसमानाः अर्ध १/२ योजनोत्सेधाः उत्सेधाष्टमव्यासाः नानारत्नसङ्कीर्णाः अम्बुजवेदिका द्वादश ज्ञेयाः।।६४१।।

चउगोउरवं वेदीबाहिरदो पढमबिदियगे सुण्णं।
तदिए सुरुत्तमाणं अट्ठदि से अट्ठसयरुक्खा।।६४२।।
चतुर्गोपुरका वेदीबाह्यतः प्रथमद्वितीयके शून्यं ।
तृतीये सुरोत्तमानां अष्टदिशासु अष्टशतवृक्षाः।।६४२।।

चउ । ता १२ वेद्यश्चतुर्गोपुरयुक्ताः बाह्यवेद्या आरभ्य प्रथमद्वितीयान्तराले शून्ये तृतीयेऽन्तराले सुरोत्तमानामष्टशतवृक्षाः १०८ अष्टसु दिशासु मिलित्वा भवन्ति।।६४२।।

तुरिए पुव्वदिसाए देवीणं चारि पंचमे दु वणं।
वावी वट्टचउरस्सादी छट्ठे हवे गयणं।।६४३।।
तुर्ये पूर्वदिशि देवीनां चत्वारः पञ्चमे दु वनं।
वाप्यः वृत्तचतुरस्रादयः षष्ठे भवेत् गगनं ।।६४३।।

तुरिए । चतुर्थान्तराले पूर्वदिशि देवीनां चत्वारो वृक्षाः, पञ्चमे त्वन्तराले वनं तत्र वृत्तचतुरस्राद्या वाप्यश्च सन्ति । षष्ठेऽन्तराले शून्यं भवेत् ।।६४३।।

चउदिससोलसहस्सं तणुरक्खे सत्तमम्हि अट्ठमगे।
ईसाणुत्तरवादे चदुस्सहस्सं समाणाणं।।६४४।।
चतुर्दिक्षु षोडशसहस्रं तनुरक्षाणां सप्तमे अष्टमके।
ऐशान्युत्तरवातासु चतुः सहस्रं समानानाम्।।६४४।।

गाथार्थ :—वे १२ वेदियां चार चार गोपुरों (दरवाजों) से युक्त हैं। बाह्य वेदिका की ओर से प्रारम्भ करके प्रथम और द्वितीय अन्तराल में शून्य अर्थात् परिवार वृक्षादि कुछ नहीं हैं । तीसरे अन्तराल की आठों दिशाओं में उत्कृष्ट यक्षदेवों के १०८ वृक्ष हैं।।६४२।।

गाथार्थ :—चौथे अन्तराल में पूर्व दिशा में यक्षी देवाङ्गनाओं के चार जम्बूवृक्ष हैं। पाचवें अन्तराल में वन है और उन वनों में चौकोर और गोल आकारवाली बावड़ियाँ हैं । छठे अन्तराल में किसी तरह की रचना नहीं है, वहाँ शून्य है।।६४३।।

गाथार्थ :—सातवें अन्तराल की चारों दिशाओं में (प्रत्येक दिशा में चार चार हजार) सोलह हजार वृक्ष तनुरक्षकों के हैं तथा आठवें अन्तराल में ईशान, उत्तर और वायव्य दिशाओं में सामानिक देवों के चार हजार वृक्ष हैं।।६४४।।

चउ । सप्तमान्तराले चतुर्दिक्षु मिलित्वा षोडशसहस्त्राणि १६००० अङ्गरक्षकाणां वृक्षाः अष्टमेऽन्तराले ऐशान्यामुत्तरस्यां वायव्यां च दिशि चतुः सहस्त्राणि सामानिकानां वृक्षाः ।।६४४।।

णवमतिए जलणजमे णेरिदि अब्भंतरत्तिपरिसाणं।
बत्तीस ताल अडदालसहस्सा पायवा कमसो।।६४५।।

नवमत्रये ज्वलनयाम्ययोः नैर्ऋत्यां अभ्यन्तरत्रिपरिषदां।
द्वात्रिंशत् चत्वारिंशत् अष्टचत्वारिंशत् सहस्राणि पादपाः क्रमशः।।६४५।।

णवम । नवमे दशमे एकादशे चान्तराले यथासंख्यं आग्नेय्यां याम्यां नैऋत्यां च दिशि अभ्यन्तरादिपरिषत्त्रयाणां द्वात्रिंशत्सहस्त्राणि चत्वारिंशत्सहस्त्राणि अष्टचत्वारिंशत् सहस्त्राणि च पादपाः क्रमशो भवन्ति ।।६४५।।

सेणामहत्तराणं बारसमे पच्छिमम्हि सत्तेव।
मुक्खजुदा परिवारा पउमादो पंचयज्झहिया।।६४६।।

सेनामहत्तराणां द्वादशे पश्चिमायां सप्तैव।
मुख्ययुताः परिवाराः पद्मेभ्यः पञ्चाभ्यधिकाः।।६४६।।

सेणा । द्वादशेऽन्तराले पश्चिमायां दिशि सेनामहत्तराणां सप्तैव वृक्षाः मुख्यवृक्षयुताः सर्वे परिवारवृक्षाः पद्मसरसि स्थितपद्मेभ्यः पञ्चाभ्यधिकाः स्युः। चतुर्थान्तरालस्थाः चत्वारो देवीवृक्षाः मुख्य एकवृक्षः इत्येतैरभ्यधिकत्वात् १४०१२० ।।६४६।।

विशेषार्थ :—सातवें अन्तराल में चारों दिशाओं के मिलाकर कुल सोलह हजार वृक्ष उन्हीं उपर्युक्त यक्षों के अङ्गरक्षक देवों के वृक्ष हैं।

गाथार्थ :—नवमत्रये अर्थात् नौवें, दसवें और ग्यारहवें अन्तराल में आग्नेय, दक्षिण और नैऋत्य दिशाओं में अभ्यन्तर, मध्यम और बाह्य पारिषद देवों के क्रमशः बत्तीस हजार, चालीस हजार और अड़तालीस हजार जम्बूवृक्ष हैं।।६४५।।

विशेषार्थ :—नवम अन्तराल की आग्नेय दिशा में अभ्यन्तर पारिषद देवों के ३२००० वृक्ष, दसवें अन्तराल की दक्षिण दिशा में मध्यम पारिषद देवों के चालीस हजार वृक्ष और ग्यारहवें अन्तराल की वायव्य दिशा में बाह्य पारिषद देवों के ४८००० जम्बूवृक्ष हैं।

गाथार्थ :—बारहवें अन्तराल की पश्चिम दिशा में सेना महत्तरों के सात वृक्ष हैं। एक मुख्य वृक्ष सहित सर्व परिवार वृक्षों का प्रमाण पद्म के परिवार पद्मों के प्रमाण से पाँच अधिक हैं।।६४६।।

दलगाढवासमरगय जोयणदुगतुंग सुत्थिरक्खंधो।
पीठिय उवरिं जंबू वज्जदलडवासदीह चउसाहा।।६४७।।

दलगाढव्यासमरकतः योजनद्विकतुङ्गः सुस्थिरस्कन्धः।
पीठादुपरि जम्बू वज्रदलाष्टव्यासदीर्घाः चतुः शाखाः।।६४७।।

दल। अर्ध योजनगाधस्तद्व्यासो मरकतमयः पीठादुपरि योजनद्वयोत्तुङ्गः सुस्थिरस्कन्धो जम्बूवृक्षोऽस्ति । स्कन्धादुपरि वज्रमय्योर्धयोजनव्यासा अष्टयोजनदीर्घाश्चतस्त्रःशाखाः सन्ति ।।६४७।।

णाणारयणुवसाहा पवालसुमणा मुदिंगसरिसफला।
पुढविमया दसतुंगा मज्झेग्गे छच्चदुव्वासा।।६४८।।

नानारत्नोपशाखः प्रवालसुमनाः मृदङ्गसदृशफलः।
पृथ्वीमयः दशतुङ्गः मध्येग्रे षट्चतुर्व्यासः।।६४८।।

णाणा। स च वृक्षो नानारत्नमयोपशाखः प्रवालवर्णसुमनाः मृदङ्गसदृशफलः पृथ्वीमयः दशयोजनतुङ्गो मध्येग्रे यथासंख्यं षट् ६ चतु ४ र्योजनव्यासः स्यात् ।।६४८।।

विशेषार्थ :—बारहवें अन्तराल में पश्चिम दिशा में सेना महत्तरों के सात ही जम्बूवृक्ष हैं । इस प्रकार एक मुख्य जम्बूवृक्ष से युक्त सम्पूर्ण परिवार जम्बूवृक्षों का प्रमाण पद्मद्रह में स्थित श्रीदेवी के पद्म परिवारों के प्रमाण से पाँच अधिक हैं। यहाँ चौथे अन्तराल में चार अग्रदेवांगनाओं के चार और एक मुख्य जम्बूवृक्ष इस प्रकार पाँच अधिक हैं। **इस प्रकार—१ + १०८ +४ +१६००० +४००० +३२००० +४००००+ ४८००० + ७ =१,४०,१२० अर्थात् सम्पूर्ण जम्बूवृक्षों का प्रमाण एक लाख चालीस हजार एक सौ बीस है।**

गाथार्थ :—अर्ध योजन गहरी और एक कोश चौड़ी जड़ से युक्त तथा पीठ से दो योजन ऊँचे मरकत मणिमय, सदृढ़ स्कन्ध से सहित जम्बूवृक्ष है। अपने स्कन्ध से ऊपर वज्रमय अर्ध योजन चौड़ी और आठ योजन लम्बी उसकी चार शाखाएँ हैं।।६४७।।

विशेषार्थ :—पीठ के बहुमध्य भाग में पाद पीठ सहित मुख्य जम्बूवृक्ष है, जिसका मरकत मणिमय सुदृढ़ स्कन्ध पीठ से दो योजन ऊँचा, एक कोस चौड़ा और अर्ध योजन अवगाह (नींव) सहित है। स्कन्ध से ऊपर वज्रमय अर्ध योजन चौड़ी और आठ योजन लम्बी उसकी चार शाखाएँ हैं।

उत्तरकुलगिरिसाहे जिणगेहो सेससाहतिदयम्हि।
आदरअणादराणां जक्खकुलुत्थाणमावासा।।६४९।।

उत्तरकुरुगिरिशाखायां जिनगेहः शेषशाखात्रितये।
आदरानादरयोः यक्षकुलोत्थयोरावासाः।।६४९।।

उत्तर । तस्य जम्बूवृक्षस्योत्तरकुलगिरिरदिग्भागस्थशाखायां जिनगेहोऽस्ति।शेषे शाखात्रये यक्षकुलोद्भवयोः आदरानादरयोरावासाः सन्ति ।।६४९।।

अथ परिवारवृक्षाणां प्रमाणां तेषां सस्वामिकत्वं चाह —

जंबूतरुदलमाणा जंबूरुक्खस्स कहिदपरिवारा।
आदरअणादराणं परिवारावासभूदा ते।।६५०।।

जम्बूतरुदलमाना जम्बूवृक्षस्य कथितपरिवाराः।
आदरानादरयोः परिवारावासभूतास्ते।।६५०।।

जंबू । जम्बूवृक्षपरिवारा जम्बूवृक्षप्रमाणार्धप्रमाणाः ते चादरानादरयोः परिवारावासभूताः ।।६५०।।

गाथार्थ :— वह जम्बूवृक्ष नाना प्रकार की रत्नमयी उपशाखाओं से युक्त, प्रवाल (मूँगा) सदृश वर्ण वाले पुष्प और मृदङ्ग सदृश फल से संयुक्त पृथ्वीकायमय है (वनस्पतिकाय नहीं) उसकी सम्पूर्ण ऊंचाई दस योजन है। मध्य भाग की इसकी चौड़ाई ६ योजन और अग्र भाग की चौड़ाई चार योजन प्रमाण है।।६४८।।

गाथार्थ :— उस जम्बूवृक्ष की जो शाखा उत्तर कुरुगत नील कुलाचल की ओर गई है, उस पर जिनमन्दिर है। अवशेष तीन शाखाओं पर यक्षकुलोत्पन्न आदर-अनादर नामक देवों के आवास हैं।।६४९।।

परिवारवृक्षों का प्रमाण और उनका स्वामित्व कहते हैं —

गाथार्थ :— जम्बूवृक्ष का जो प्रमाण कहा गया है, उसका अर्धप्रमाण परिवारजम्बूवृक्षों का कहा गया है। ये सभी परिवार जम्बूवृक्ष **आदर-अनादर देवों के परिवारों के आवास स्वरूप हैं**।।६५०।।

विशेषार्थ :- परिवार जम्बूवृक्षों का प्रमाण मुख्य जम्बूवृक्ष के प्रमाण का आधा है तथा परिवार जम्बूवृक्षों की जो शाखाएँ हैं उन पर आदर-अनादर यक्ष परिवारों के आवास बने हुए हैं।

जम्बूद्वीप में शाल्मलीवृक्ष पर जिनमंदिर

(त्रिलोकसार ग्रन्थ से)

अथ शाल्मलीवृक्षस्वरूप गाथाद्वयेनाह[१] —

सीतोदावरतीरे णिसहसमीवे सुरद्दिणेरिदिए।
देवकुरुम्हि मणोहररुप्पथले सामली सपरिवारो।।६५१।।

सीतोदापरतीरे निषधसमीपे सुराद्रिनैर्ऋत्यां।
देवकुरौ मनोहररूप्यस्थले शाल्मली सपरिवारः।६५१।।

सीतोदा । सीतोदापरतीरे निषधसमीपे सुराद्रेः नैर्ऋत्यां दिशि देवकुरुक्षेत्रे मनोहररूप्यस्थले सपरिवारः शाल्मलीवृक्षोस्ति ।१४०१२० ।।६५१।।

जंबूसमवण्णणो सो दक्खिणसाहम्हि जिणगिहं सेसे।
दिससाहतिए गरुडवइवेणूवेणादिधारिगिहं।।६५२।।

जम्बूसमवर्णनः स दक्षिणशाखायां जिनगृहं शेषे।
दिशाशाखात्रये गरुडपतिवेणुवेण्वादिधारिगृहम्।।६५२।।

जंबू । असौ जम्बूसमवर्णनः तस्य दक्षिणशाखायां जिनगृहमस्ति । शेषे दिग्गतशाखात्रये गरुडपत्योर्वेणुवेणुधारिणोः गृहाणि संति ।।६५२।।

जम्बूद्वीप में शाल्मलीवृक्ष पर जिनमंदिर

दो गाथाओं में शाल्मली वृक्ष का स्वरूप कहते हैं—

गाथार्थ :— सीतोदा नदी के पश्चिम तट पर, निषधकुलाचल के समीप, सुदर्शन मेरु की नैऋत्य दिशागत देवकुरुक्षेत्र में शाल्मली वृक्ष की मनोहारिणी रूप्यमयी स्थली है । **वहाँ अपने १,४०,१२० परिवार शाल्मली वृक्षों सहित मुख्य शाल्मली वृक्ष है**।।६५१।।

गाथार्थ :— शाल्मली वृक्ष का वर्णन भी जम्बूवृक्षसदृश ही हैं। शाल्मली की दक्षिण शाखा पर जिनभवन और शेष तीन शाखाओं पर गरुड़कुमारों के स्वामी वेणु और वेणुधारी देवों के भवन हैं।।६५२।।

---

१. त्रिलोकसार ग्रन्थ पृ. ५३८ से ५३९ तक।

जम्बूवृक्ष एवं शाल्मली वृक्षों पर जिनमंदिर

(जंबूद्वीपपण्णत्ती ग्रंथ से[१])

एयं च सयसहस्सा चालीससहस्स होंति णिद्दिट्ठा।
एयं च सयं णेया सोलस कमलाण परिसंखा।।१२६।।
विक्खंभुच्छेहादी पउमाणं दुगुणदुगुणवड्ढी उ।
हिमवंतादो णेया जाव दु णिसहो गिरिंदो य।।१२७।।
जंबूदुमेसु एवं परिसंखा होंति जंबुगेहाणं।
णवरि विसेसो जाणे चत्तारिदुमाहिया जंबू।।१२८।।
जंबूदुमाहिवस्स दु चत्तारि हवंति तस्स महिसीओ।
चत्तारि जंबुगेहा देवीणं होंति णिद्दिट्ठा।।१२९।।
एदेण कारणेण य चदुसहिया होंति जंबुगेहाणि।
जह वण्णणा सरस्स दु तह जंबुदुमस्स णिद्दिट्ठा।।१३०।।
उणवीसा एयसयं चालीससहस्स तह य जंबुघरा।
एयं च सयसहस्सं जंबुस्स दु होंति परिवारा।।१३१।।

जम्बूवृक्ष एवं शाल्मली वृक्षों पर जिनमंदिर

जम्बूवृक्ष और शाल्मली वृक्ष का वर्णन एक सा ही है। विशेषता इतनी ही है कि शाल्मलीवृक्ष की दक्षिण शाखा पर जिनमन्दिर है और शेष तीन शाखाओं पर गरुड़पति वेणु और वेणुधारी देवों के आवास हैं तथा शाल्मली वृक्ष के परिवार वृक्षों पर वेणुधारी देवों के परिवारों के आवास हैं।

कमलों की **संख्या** एक लाख चालीस हजार एक सौ सोलह (१+३२०००+४००००+४८०००+७+४०००+१६०००+१०८=१४०११६) जानना चाहिये ।।१२६।। हिमवान् से लेकर निषध पर्वत पर्यन्त कमलों के विष्कम्भ व उत्सेधादिक में दुगुणी दुगुणी वृद्धि जानना चाहिये।।१२७।। इसी प्रकार जंबूवृक्षों के ऊपर जम्बूगृहों की भी संख्या हैं। यहां केवल इतना विशेष जानना चाहिये कि जंबूवृक्ष चार वृक्षों से अधिक हैं।।१२८।।जो देव जम्बूवृक्ष का अधिपति है उसकी चार पट्टदेवियां है। उन देवियों के चार जंबूवृक्ष निर्दिष्ट किये गये हैं।।१२९।।

इस कारण पद्मगृहों की अपेक्षा जंबूवृक्ष चार अधिक हैं। जैसा वर्णन सरोवर का किया गया है वैसा ही जम्बूवृक्षका भी बतलाया गया है।।१३०।। **जम्बूवक्ष के उत्तम परिवारवृक्ष एक लाख चालीस हजार एक सौ उन्नीस हैं।।१३१।।**

---

१. जंबूद्वीपपण्णत्ती ग्रंथ–पृ. ४४ से ४६ तक।

वीसहियसयं णेया चालीससहस्स एगलक्खं च।
जंबूदुमपरिसंखा णिद्दिट्ठा सव्वदरिसीहिं।।१३२।।
जावदिय जंबुभवणा जावदिया तह य पउमवरभवणा।
तावदिया णिद्दिट्ठा जिणभवणा होंति रयणमया।।१३३।।
जावदिय जंबुगेहा णाणाविहकणयरयणपरिणामा।
तावदिया णायव्वा सामलिरुक्खाण परिगेहा।।१३४।।
णवएगएग सुण्णं चत्तारि य एग होंति परिसंखा।
थाणक्कमेण णेया सामलिरुक्खस्स परिवारा।।१३५।।
सुण्णदुगएक्कसुण्णं चत्तारि य एय होंति णिद्दिट्ठा।
सामलितरुवर सव्वा थाणाणुकमेण जाणाहि।।१३६।।
एवं महाघराणं परिसंखा ताण होंति णिद्दिट्ठा।
खुल्लयघरणिवहाणं को वण्णइ ताण परिसंखा।।१३७।।
पुव्वाभिमुहा णेया उत्तमगेहा हंवति णिद्दिट्ठा।
ताणाभिमुहा सेसा जहण्णगेहा वियाणाहि।।१३८।।

जंबूवृक्षों की संख्या सर्वदर्शियों द्वारा निर्दिष्ट एक लाख चालीस हजार एक सौ बीस जानना चाहिये ।।१३२।।

जितने जम्बूभवन और जितने पद्मभवन हैं उतने ही रत्नमय जिनभवन भी कहे गये हैं। ।।१३३।।

नाना प्रकार के सुवर्ण एवं रत्नों के परिणामरूप जितने जम्बूगृह हैं उतने ही शाल्मलिवृक्षों के भी गृह जानना चाहिये ।।१३४।।

नौ, एक, एक,शून्य, चार और एक (१४०११९) इस प्रकार स्थान (अंक–) क्रम से शाल्मलिवृक्ष के परिवारवृक्षों की संख्या जानना चाहिये ।।१३५।।

शून्य, दो, एक, शून्य, चार और एक, (१४०१२०) इस प्रकार स्थान (अंक) क्रम से सब शाल्मलिवृक्षों की संख्या निर्दिष्ट की गई जानना चाहिये ।।१३६।।

इस प्रकार उन महागृहों की संख्या निर्दिष्ट की है। **उनके क्षुद्र घरों के समूहों की संख्या का वर्णन कौन कर सकता है।** ।।१३७।।

उत्तम गृह पूर्वाभिमुख निर्दिष्ट किये गये हैं। शेष जघन्य गृह उनके सन्मुख जानना चाहिये ।।१३८।।

पउमेसु सामलीसु य जंबूरुक्खे य रयणपरिणाम।
जिणभवणा णिद्दिट्ठा अक्किट्टिमा सासदसभावा।।१३९।।

भिंगारकलसदप्पण- बुव्वुदघंटादिधयवडाएहिं।
सोहंति जिणाण घरा मणिकंचणमंडिया दिव्वा।।१४०।।

वरचामरभामंडलछत्तत्तयकुसुमवरिसणिवहेहिं।
सव्वोवकरणसहिया जिणपडिमाओ विरायंति।।१४१।।

उववादघरा णेया अहिसेयघरा य मंडणघरा य।
अत्थाणवरा विउला गब्भवरा कीडणघरा य।।१४२।।

णाडयघरा विचित्ता वरतूरमुदिंगसद्दगंभीरा।
मोहणघरा विसाला कालागरुसुरहिगंधड्ढा।।१४३।।

डोलाघरा य रम्मा णाणामणिविप्फुरंतकिरणोहा।
संगीयघरा तुंगा सभाघरा होंति रमणीया।।१४४।।

एवं अवसेसाणं दीवाणं सुरवराण पउमेसु।
जंबूसु सामलीसु य संखापरिमाण णिद्दिट्ठा।।१४५।।

पद्मों, शाल्मलिवृक्षों और जम्बूवृक्षों के ऊपर रत्नों के परिणामरूप अकृत्रिम और शाश्वत स्वभाववाले जिनभवन निर्दिष्ट किये गये हैं।।१३९।।

मणियों और सुवर्ण से मण्डित ये दिव्य जिनभवन भृंगार, कलश, दर्पण, बुव्वुद, घंटादिक एवं ध्वजा-पताकाओं से शोभायमान होते हैं।।१४०।।

उन जिनभवनों में सब उपकरणों से सहित जिनप्रतिमायें उत्तम चामर, भामंडल, तीन छत्र और कुसुमवृष्टिके समूहों से विराजमान हैं।।१४१।।

उक्त जिनभवनों में विशाल उपपादगृह, अभिषेकगृह, मण्डनगृह, आस्थानगृह, गर्भगृह और विस्तृत क्रीड़ागृह जानना चाहिये। इनके अतिरिक्त उत्तम तूर्य एवं मृदंग के शब्द से गंभीर विचित्र नाटकगृह, कालागरु की सुगंध से व्याप्त विशाल मोहनगृह (मैथुनगृह), नाना मणिओं के प्रकाशमान किरण समूह से युक्त रमणीय दोलागृह, उन्नत संगीत गृह और रमणीय सभागृह भी होते हैं ।।१४२-१४४।।

इसी प्रकार अवशेष द्वीपों के पद्मों, जम्बूवृक्षों और शाल्मलिवृक्षों पर स्थित उत्तम देवों की संख्याका प्रमाण निर्दिष्ट किया गया है।।१४५।।

जंबूवृक्ष एवं उनके परिवार वृक्षों के जिनमंदिर

उत्तरकुरुम्मि मज्झे होइ महारयणजालपिंजरिओ।
उत्तरपुव्वदिसाए मेरुस्स सुदंसणो जंबू[1]।।५७।।
पंचेव जोयणसया विक्खंभायाम कणयमयपीढं।
बारहजोयणवहलं मज्झे अंते च दो कोसा।।५८।।
वरवेदिएहि जुत्तं मणिमयवरतोरणेहि रमणीयं।
णाणातरुगणणिवहं जिणभवणविहूसियं रम्मं।।५९।।
तस्स बहुमज्झदेसे जंबूणद अट्ठजोयणायामं।
चदुजोयणउत्तुंगं विक्खंभ हवंति चत्तारि।।६०।।
णिम्मलमणिमयपीढं बारसवेदीहि परिउढं दिव्वं।
णाणातोरणणिवहं कंचणमणिरयणसंछण्णं।।६१।।
तस्स दु मज्झे अवरं णायव्वं अट्ठजोयणुत्तुंगं।
चउजोयणवित्थिण्णं मणिमयवरभासुरं पीढं।।६२।।
तस्स दु पीढस्सुवरिं सुदंसणो णामदो हवे जंबू।
बेगाउवबाहल्लं अट्ठेव य जोयणुत्तुंगं।।६३।।

जंबूवृक्ष एवं उनके परिवार वृक्षों के जिनमंदिर

उत्तरकुरु के मध्य में मेरु के उत्तर-पूर्व (ईशान) दिशा में महारत्नों के समूह से पिंजरित सुदर्शन नामक जम्बूवृक्ष है ।।५७।।

पांच सौ योजन प्रमाण विष्कम्भ व आयाम से सहित, मध्यमें बारह योजन व अन्त में दो कोश बाहल्य से संयुक्त, उत्तम वेदिकाओं से युक्त, मणिमय उत्तम तोरणों से रमणीय, नाना तरुगणों के समूह से परिपूर्ण, और जिनभवनों से भूषित रमणीय सुवर्णमय पीठ है।।५८-५९।।

उसके बहुमध्य देश में आठ योजन आयात, चार योजन ऊंचा व चार योजन विस्तृत, बारह वेदियों से वेष्टित, नाना तोरणों से सहित तथा सुवर्ण, मणि एवं रत्नों से व्याप्त निर्मल मणिमय सुवर्ण पीठ है।।६०-६१।।

उसके मध्यमें आठ योजन ऊंचा और चार योजन विस्तीर्ण दीप्तिमान् उत्तम मणिमय दूसरा पीठ जानना चाहिये ।।६२।। उस पीठ के ऊपर दो कोश बाहल्यवाला व आठ योजन ऊंचा **सुदर्शन नामक जम्बूवृक्ष** है।।६३।।

---

१. जंबूद्वीपपण्णत्ती ग्रंथ-पृ. १०५ से १०७ तक।

छज्जोयणा य विडवी णाणामणिकणयकुसुमफलपउरं।
वेरुलियरयणमूलं मरगयवरपत्तरमणीयं।।६४।।
चदुसु वि दिसासु भागे चत्तारि हवंति तस्स वरसाहा।
छज्जोयणआयामा वित्थारा होंति बे कोसा।।६५।।
सव्वेसु होंति गेहा कोसायामा तदद्धविक्खंभा।
पादूणकोसतुंगा चदुसु वि साहेसु बोद्धव्वा।।६६।।
उत्तरदिसाविभागे जिणिंद इंदाण होंति वरभवणं।
अवसेसतिण्णिभवणा जक्खस्स यणाढियस्स हवे।।६७।।
जंबूदुमा वि णेया बत्तीससहस्स होंति धूमदिसे।
दक्खिणदिसे वि णेया चालीससहस्स दुमणिवहा।।६८।।
णेरिदिदिसाविभागे अडदालसहस्स होंति जंबुदुमा।
एदे तिण्णि वि संडा तिण्णि वि परिसाण णायव्वा।।६९।।
सत्ताणीयाणि तहा सत्तदुमा होंति पच्छिमदिसाए।
चदुसु वि दिसाविभागे चत्तारि हवंति महिसीणं।।७०।।

छह योजन प्रमाण (मध्य शाखा(विडिमा) से संयुक्त) उक्त वृक्ष नाना मणि एवं सुवर्णमय कुसुमों व फलों की प्रचुरता से सहित , वैडूर्य रत्नमय मूलसे संयुक्त, और मरकतमय उत्तम पत्रों से रमणीय है।।६४।।

उसकी चारों ही दिशाओं में छह योजन लम्बी और दो कोश विस्तारवाली चार उत्तम शाखायें हैं।।६५।।

इन चारों ही शाखाओं पर एक कोश आयत, इससे आधे विस्तृत और पौन कोश ऊंचे प्रासाद जानना चाहिये ।।६६।।

इनमें से उत्तर दिशाभाग में स्थित श्रेष्ठ भवन जिनेन्द्र-इन्द्रों का तथा शेष तीन भवन अनादृत-अनावृत यक्ष के हैं ।।६७।।

जम्बूवृक्ष के परिवार वृक्ष भी बत्तीस हजार धूम (आग्नेय) दिशा में, चालीस हजार दक्षिण दिशामें और अड़तालीस हजार नैऋत्य दिशा विभाग में जानना चाहिये। ये तीनों समूह तीनों पारिषद देवों के समझना चाहिये।।६८-६९।।

पश्चिम दिशा में सात वृक्ष सात अनीकों के तथा चारों ही दिशाओं में स्थित चार वृक्ष अग्र देवियों के हैं।।७०।।

उत्तरपच्छिमभागे उत्तरभागे य पुव्वउत्तरदो।
चत्तारिसहस्सदुमा सामाणियाण बोधव्वा।।७१।।
चउरो चउरो य तहा सहस्सगुणिया दुमाण जंबूणं।
पुव्वुत्तरदक्खिणपच्छिमेसु कमसो मुणेयव्वा।।७२।।
अट्ठोत्तरसयसंखा अट्ठसु वि दिसासु होंति रमणीया।
आणाढियजक्खस्स य णायव्वा आदरक्खाणं।।७३।।
चालीसं च सहस्सा संद च वीसहिय तह य णायव्वा।
एयं च सयसहस्सं जंबूणं होइ परिसंखा।।७४।।
जिणभवणाण वि संखा तेत्तियमत्ता हवंति जंबूसु।
णाणारयणमयाणं अकिट्टिमाणं समुद्दिट्ठा।।७५।।
जंबूपायवसिहरे छत्तत्तयचामरादिसंजुत्ता।
बहुविहकेदुपडाया पलंबमाणा विरायंति।।७६।।
जक्खिंदो वि महप्पा सिंहासणसंठिओ महसत्तो।
वरचामरधुव्वंतो बहुविहसुरसमिदिपणदंगो।।७७।।

उत्तर-पश्चिम (वायव्य) भाग में, उत्तर भाग में और पूर्वोत्तर (ईशान) भागमें सामायिक देवों के चार हजार वृक्ष जानना चाहिये ।।७१।।

(आत्मरक्षक देवों के) चार चार हजार जंबूवृक्ष क्रम से पूर्व, उत्तर, दक्षिण और पश्चिम दिशामें जानना चाहिये ।।७२।।

आठों ही दिशाओं में रमणीय एक सौ आठ वृक्ष अनावृत यक्ष के आत्मरक्षक (प्रतीहार,मंत्री व दूत) देवों के हैं।।७३।।

जंबूवृक्षों की संख्या एक लाख चालीस हजार एक सौ बीस जानना चाहिये (१+ ३२,००० + ४०,००० + ४८,००० + ७ + ४ + ४०००+ १६,००० + १०८ = १,४०,१२०)।।७४।।

जंबूवृक्षों पर स्थित नाना रत्नमय अकृत्रिम जिनभवनों की भी संख्या उतनी मात्र अर्थात् एक लाख चालीस हजार एक सौ बीस कही गई है ।।७५।।

जम्बूवृक्ष के शिखर पर तीन छत्र व चामरादि से संयुक्त लटकती हुई बहुत प्रकार की ध्वजा-पताकायें विराजमान हैं।।७६।।

सिंहासन पर स्थित, महाबलवान् , उत्तम चामरों से वीज्यमान, बहुत प्रकार के देवों के समूहों से नमस्कृत, हार से शोभायमान वक्षस्थलवाला, उत्तम कुण्डलों से मण्डित, विशाल भुजाओं से संयुक्त, नीलोत्पल के सदृश प्रभावाला, धवल आतपत्र से

हारविराइयवच्छो वरकुंडलमंडिओ विउलबाहू।
णीलुप्पलसंकासो सिदादवत्तेण रमणीओ।।७८।।
सम्मद्दंसणसुद्धो सम्मादिट्ठीण वच्छलो धीरो।
सयलं जंबूदीवं सो भुंजइ एयछत्तेण।।७९।।
पुव्वं कदेण धम्मे सो भुंजइ उत्तमं विसयसोक्खं।
एवं णाऊण णरा धम्मम्मि सुआढिया होह।।८०।।

शाल्मलीवृक्ष एवं उनके परिवार वृक्षों के जिनमंदिर

देवकुरुम्मि दु वंसे सीदोदापच्छिमे तडे रुक्खो।
मंदरगिरिस्स णेया ईसाणदिसाए हवे सादी।।१४८।।
पंचेव जोयणसदा विक्खंभायामदिव्वमणिपीढं।
मज्झे बारहबहलं जोयणअद्धं तु अंतम्मि।।१४९।।
वरवेदिएहि जुत्तं मणितोरणमंडियं मणभिरामं।
बहुविहपायवणिवहं सरवरवावीहिं रमणीयं।।१५०।।

रमणीय, सम्यग्दर्शन से शुद्ध व सम्यग्दृष्टियों का प्रेमी, ऐसा वह धीर महात्मा यक्षेन्द्र भी समस्त जम्बूद्वीप को एकाधिपत्य से भोगता है।।७७-७९।।

वह यक्षेन्द्र पूर्वकृत धर्म से उत्तम विषयसुख को भोगता है, इस प्रकार जानकर मनुष्यों को धर्म में अतिशय आदर युक्त होना चाहिये ।।८०।।

शाल्मलीवृक्ष एवं उनके परिवार वृक्षों के जिनमंदिर

देवकुरु क्षेत्र में मन्दरगिरि की ईशान (नैऋत्य) दिशामें सीतोदा के पश्चिम तटपर स्वाति (शाल्मलि) वृक्ष जानना चाहिये ।।१४८।। पांच सौ योजन प्रमाण विष्कम्भ व आयाम से सहित तथा मध्य में बारह व अंत में अर्ध योजन बाहल्यवाला दिव्य मणिमय पीठ है।।१४९।। यह मणिपीठ उत्तम वेदियों से सहित मणिमय तोरणों से मण्डित, मन को अभिराम , बहुत प्रकार के वृक्षों के समूह से सहित , और सरोवर एवं वापियों से रमणीय है ।।१५०।।

१. जंबूद्वीपपण्णत्ती ग्रंथ-पृ. ११४ से ११६ तक।

तस्स बहुमज्झदेसे होइ तहा दक्खिणुत्तरायामं।
अट्ठेव जोयणाइं तदद्धउत्तुंग मणिपीढं।।१५१।।
चउजोयणविक्खंभं बारहवेदीहिं परिउडं दिव्वं।
मणिगणजलंत भासुरतोरणअडदालसंछण्णं।।१५२।।
तं मज्झगयं पीढं मणिमय अट्ठद्धजोयणुत्तुंग।
जोयणसमचदुरस्सं णाणामणिरयणसंछण्णं।।१५३।।
तस्स दु उवरिं होदि य सामलिरुक्खो महब्भसंकासो।
साहोवसाहगहणो मणिकंचणरयणपरिणामो।।१५४।।
बेगाउयअवगाढो अट्ठेव जोयणसमुत्तुंगो।
बे चेव कोसरुंदो रमणमओ णिम्मलो दिव्वो।।१५५।।
बेजोयणउप्पइया धरणीदो तस्स होंति साहाओ।
छज्जोयणतुंगाओ मरगयपत्तेहिं छण्णाओ।।१५६।।
साहोवसाहसहिओ मज्झे छज्जोयणा हवे बहलो।
सिहरे चत्तारि हवे बहुविहमणिकुसुमफलणिवहो।।१५७।।

उसके बहुमध्य भाग में आठ योजन दक्षिण-उत्तर लंबा, इससे आधा ऊंचा, चार योजन विस्तृत, बारह वेदियों से वेष्टित, मणिसमूह की दीप्ति से भासुर तथा अड़तालीस तोरणों से व्याप्त दूसरा मणिमय दिव्य पीठ है।।१५१-१५२।।

वह मध्यगत मणिमय पीठ आठ के आधे अर्थात् चार योजन ऊंचा, एक योजन समचतुष्कोण और नाना मणियों व रत्नों से व्याप्त है।।१५३ ।।

उसके ऊपर महामेघ के सदृश , शाखा-उपशाखाओं से गहन ; मणि , सुवर्ण एवं रत्नों के परिणामरूप, दो कोश अवगाह से युक्त, आठ योजन उंचा, दो कोश विस्तार से सहित, रत्नमय, निर्मल और दिव्य शाल्मलि वृक्ष स्थित है।।१५४-१५५।।

पृथिवी से दो योजन ऊपर जाकर उसकी छह योजन ऊंची और मरकतमय पत्तों से व्याप्त शाखायें है।।१५६।।

शाखा-उपशाखाओं से सहित वह वृक्ष मध्य में छह योजन व शिखर पर चार योजन बाहल्य से सहित और बहुत प्रकार के मणिमय कुसुमों एवं फलों के समूह से संयुक्त है ।।१५७।।

साहासु होंति दिव्वा पासादा कणयरयणपरिणामा।
दक्खिणदिसाविभागे जिणइंदाणं समुद्दिट्ठा।।१५८।।

कोसं आयामेण य कोसद्धं तह य होंति विक्खंभा।
देसूणयं च कोसं उच्छेहा होंति पासादा।।१५९।।

णामेण वेणुदेवो गरुडाणं अहिवई महासत्तो।
सामलितरुम्मि णेया अच्छइ दिव्वाणुभावेण।।१६०।।

साहासिहरेसु तहा णाणाविहधयवडा समुत्तुंगा।
वरचामरछत्तत्तयसंजुत्ता होंति णायव्वा।।१६१।।

चदुसु वि दिसाविभागे सामलिरुक्खा हवंति णायव्वा।
चदु चदु चेव सहस्सा तह चेव य आदरक्खाणं।।१६२।।

दक्खिणपुव्वदिसाए अब्भंतरपारिसाण अमराणं।
सामलिपादवसंखा बत्तीससहस्स णिद्दिट्ठा।।१६३।।

तह दक्खिणे वि णेया चालीससहस्स संवलीरुक्खा।
मज्झिमपरिसाण तद्दा णायव्वा होंति णियमेण।।१६४।।

इन शाखाओं पर सुवर्ण एवं रत्नों के परिणामरूप दिव्य प्रासाद हैं। इनमें से दक्षिण दिशा विभाग में स्थित प्रासाद जिनेन्द्रों के कहे गये हैं।।१५८।।

ये प्रासाद एक कोश आयत, अर्ध कोश विस्तृत और कुछ कम एक कोश ऊंचे है।।१५९।।

शाल्मलि वृक्ष पर गरुड़कुमारों का स्वामी वेणु नामक महाबलवान् देव दिव्य प्रभाव से रहता है, ऐसा जानना चाहिये ।।१६०।।

शाखाशिखरों पर उत्तम चामरों व तीन छत्रों से संयुक्त उन्नत नाना प्रकार की ध्वजा-पताकायें जानना चाहिये ।।१६१।।

चारों ही दिशाविभागों में स्थित चार चार हजार शाल्मलि वृक्ष आत्मरक्ष देवों के जानना चाहिये ।।१६२।।

दक्षिण-पूर्व (आग्नेय) दिशा में अभ्यन्तर पारिषद देवों के बत्तीस हजार शाल्मलिवृक्ष निर्दिष्ट किये गये हैं।।१६३।।

तथा दक्षिण दिशा में नियम से मध्यम पारिषद देवों के चालीस हजार शाल्मलिवृक्ष हैं, ऐसा जानना चाहिये ।।१६४।।

अट्ठेदालसहस्सा बाहिरपरिसाण होंति णायव्वा।
दक्खिणपच्छिमभागे णिद्दिट्ठा सव्वदरिसीहिं।।१६५।।

पच्छिमदिसे वि णेया सत्ताणीयाण सत्त रुक्खा य।
अट्ठोत्तरसयरुक्खा अट्ठसु वि दिसासु ते होंति।।१६६।।

पच्छिमउत्तरकोणे उत्तरभागे य पुव्वउत्तरदो।
सामाणियाण होंति हु चत्तारिसहस्स मणिरुक्खा।।१६७।।

चत्तारि तुंग पायव देवीणं होंति चदुसु वि दिसासु।
सव्वेसु पायवेसु य पासादा होंति णायव्वा।।१६८।।

सव्वेसु य पासादे जिणपडिमा होंति रूवसंपण्णा।
सीहासणछत्तत्तयभामंडलसंजुया सव्वे।।१६९।।

दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य) भागमें सर्वदर्शियों द्वारा निर्दिष्ट किये गये बाह्य पारिषद देवों के अड़तालीस हजार शाल्मलि वृक्ष जानना चाहिये ।।१६५।।

पश्चिम दिशा में भी सात अनीक देवों के सात वृक्ष जानना चाहिये ।(मंत्री व प्रतीहारादि रूप देवों के जो) एक सौ आठ वृक्ष हैं वे आठों ही दिशाओं में स्थित हैं।।१६६।।

पश्चिम-उत्तर (वायव्य) कोण में, उत्तर भाग में और पूर्व-उत्तर (ईशान) दिशा में सामानिक देवों के चार हजार मणिमय वृक्ष हैं।।१६७।।

चार अग्र देवियों के उन्नत चार वृक्ष चारों ही दिशाओं में स्थित हैं। इन सब वृक्षों पर प्रासाद होते हैं, ऐसा जानना चाहिये।।१६८।।

सभी प्रासादों में सुन्दर रूप से सम्पन्न जिनप्रतिमायें हैं। ये सब प्रतिमायें, सिंहासन, तीन छत्र एवं भामण्डल से संयुक्त होती हैं।।१६९।।

शाल्मली वृक्ष पर जिनमंदिर

(तिलोयपण्णत्ती ग्रन्थ से[१])

मंदरगिरिंदंदक्खिणविभागगद भद्दसालवेदीदो।
दक्खिणभायम्मि पुढं णिसहस्स य उत्तरे भागे।।२१३८।।
विज्जुप्पहपुव्वदिसा सोमणसादो य पच्छिमे भागे।
पुव्वावरतीरेसुं सीदोदे होदि देवकुरू।।२१३९।।
णिसहवणवेदिपासे तस्स य पुव्वावरेसु दीहत्तं।
तेवण्णसहस्साणिं जोयणमाणं विणिद्दिट्ठं।।२१४०।।
अट्ठसहस्सा चउसयचउतीसा मेरुदक्खिणदिसाए।
सिरिभद्दसालवेदियपासे तक्खेत्तदीहत्तं।।२१४१।।
।८४३४।
एक्करससहस्साणिं पंचसया जोयणाणि बाणउदी।
उणवीसहिदा दुकला तस्सुत्तरदक्खिणे रुंदो।।२१४२।।
।११५९२ २/१९।
पणुवीससहस्साइं णवसयइगिसीदिजोयणा रुंदो ।
दोगयदंतसमीवे वंकसरूवेण णिद्दिट्ठं।।२१४३।।
। २५९८१।

शाल्मली वृक्ष पर जिनमंदिर

मन्दरपर्वत के दक्षिण भाग में स्थित भद्रशालवेदी से दक्षिण , निषध से उत्तर, विद्युत्प्रभ के पूर्व और सौमनस के पश्चिम भाग में सीतोदा के पूर्व-पश्चिम किनारों पर देवकुरु है ।।२१३८-२१३९।।

निषधपर्वत की वनवेदी के पास में उसकी पूर्व-पश्चिम लंबाई तिरेपन हजार योजनप्रमाण बतलाई गई है।।२१४०।। मेरु की दक्षिण दिशा में श्री भद्रशाल वेदी के पास उस क्षेत्र की लंबाई आठ हजार चारसौ चौंतीस योजनमात्र है ।।२१४१।। ।८४३४।

उसका विस्तार उत्तर-दक्षिण में ग्यारह हजार पांच सौ बानबै योजन और उन्नीस से भाजित दो कलामात्र है।।२१४२।। ।११५९२ २/१९।

दोनों गजदन्तों के समीप में उसका विस्तार वक्ररूप से पच्चीस हजार नौसौ इक्यासी योजन-प्रमाण निर्दिष्ट किया गया है ।।२१४३।। ।२५९८१।

१. तिलोयपण्णत्ती ग्रन्थ पृ. ४१६ से १२२ तक।

णिसहवरवेदिवारणदंताचलपासकुंडणिस्सरिदा।
चउसीदिसहस्साणिं णदीउ पविसंति सीदोदं।।२१४४।।
। ८४०००।।
सुसमसुसमम्मि काले जा भणिदा वण्णणा विचित्तयरा।
सा हाणीए विहीणा एदस्सिं णिसहसेले य।।२१४५।।
णिसहस्सुत्तरपासे पुव्वाए दिसाए विज्जुपहगिरिणो।
सीदोदवाहिणीए पच्छिल्लदिसाए भागम्मि।।२१४६।।
मंदरगिरिंदणइरिदिभागे खेत्तम्मि देवकुरुणामे।
सम्मलिरुक्खाण थलं रजदमयं चेट्ठदे रम्मं।।२१४७।।
पंचसयजोयणाणिं हेट्ठतले तस्स होदि वित्थारो।
पण्णारस परिहीए एकसीदिजुदा य तस्सधिया।।२१४८।।
।५००। १५८१।
मज्झिमउदयपमाणं अट्ठं चिय जोयणाणि एदस्स।
सव्वंतेसुं उदओ दो दो कोसं पुढं होदि।।२१४९।।
।८।२।
सम्मलिरुक्खाण थलं तिण्णि वणा वेढिदूण चेट्ठंति।
विविहवररुक्खछण्णा देवासुरमिहुणसंकिण्णा।।२१५०।।

निषधपर्वत की उत्तम वेदी और गजदन्तपर्वतों के पास में स्थित कुण्डों से निकली हुई चौरासी हजार नदियां सीतोदा नदी में प्रवेश करती हैं ।।२१४४।। ।।८४०००।।

सुषमसुषमाकाल के विषय में जो विचित्रतर वर्णन किया गया है, वही वर्णन हानि से रहित इस निषधशैल से परे देवकुरुक्षेत्र में समझना चाहिये ।।२१४५।।

देवकुरुक्षेत्र के भीतर निषध पर्वत के उत्तरपार्श्वभाग में , विद्युत्प्रभपर्वत से पूर्वदिशा में , सीतोदा नदी की पश्चिमदिशा में और मन्दरगिरि के नैऋत्यभाग में रमणीय रजतमय शाल्मलीवृक्षों का स्थल स्थित है ।।२१४६-२१४७।।

उसका विस्तार नीचे पांचसौ योजन और परिधि पन्द्रह सौ इक्यासी योजन से अधिक है ।।२१४८।। ।५००।१५८१।

इसकी मध्यम उंचाई का प्रमाण आठ योजन और सबके अन्त में पृथक्-पृथक् दो दो कोस मात्र है।।२१४९।। । यो.८।को.२।

विविध प्रकार के उत्तम वृक्षों से व्याप्त और सुरासुरयुगलों से संकीर्ण तीन वन शाल्मलीवृक्षों के स्थल को वेष्टित करके स्थित हैं।।२१५०।।

उवरिं थलस्स चेट्ठदि समंतदो वेदिया सुवण्णमई।
दारोवरिमतलेसुं जिणिंदभवणेहिं संपुण्णा।।२१५१।।
अडजोयणउत्तुंगो बारसचउमूलउड्ढवित्थारो।
समवट्टो रजदमओ पीढो वेदीए मज्झम्मि।।२१५२।।
।८।१२।४।
तस्स बहुमज्झदेसे सपादपीढो य सम्मलीरुक्खो।
सुप्पहणामोबहुविहवररयणुज्जोयसोहिल्लो।।२१५३।।
।८।२।
उच्छेहजोयणेणं अट्ठं चिय जोयणाणि उत्तुंगो।
तस्सावगाढभागो वज्जमओ दोण्णि कोसाणिं।।२१५४।।
।८।२।
सोहेदि तस्स खंधो फुरंतवरकिरणपुस्सरागमओ।
इगिकोसबहलजुत्तो जोयणजुगमेत्तउत्तुंगो।।२१५५।।
। को १। २।
जेट्ठाओ साहाओ चत्तारि हवंति चउदिसाभाए।
छज्जोयणदीहाओ तेत्तियमेत्तंतराउ पत्तेक्कं।।२१५६।।
।६।६।

स्थल के ऊपर चारों और द्वारों के उपरिम भाग में स्थित जिनेन्द्रभवनों से परिपूर्ण सुवर्णमय वेदिका स्थित है ।।२१५१।।

इस वेदी के मध्यभाग में आठ योजन ऊंचा और मूल में बारह तथा ऊपर चार योजन प्रमाण विस्तार से सहित समवृत्त रजतमय पीठ है ।।२१५२।। ।८।१२।४।

उस पीठ के बहुमध्यभाग में पादपीठ सहित और बहुत प्रकार के उत्कृष्ट रत्नों के उद्योत से सुशोभित सुप्रभ नामक शाल्मलीवृक्ष स्थित है।।२१५३।।

वह वृक्ष उत्सेधयोजन से आठ योजन ऊंचा है। उसका वज्रमय अवगाढ़भाग दो कोस मात्र है ।। २१५४। यो.८।को.२।

उस वृक्षका एक कोस बाहल्य से सहित, दो योजनमात्र ऊंचा और प्रकाशमान उत्तम किरणों से संयुक्त पुष्यरागमय (पुखराजमय) स्कन्ध शोभायमान है।।२१५५।।
।को.१। यो.२।।

इस वृक्षकी चारों दिशाओं में चार महाशाखायें हैं । इनमें से प्रत्येक शाखा छह योजन लंबी और इतने मात्र अन्तर से सहित है ।।२१५६।। ।६।६।

साहासुं पत्ताणिं मरगयवेरुलियणीलइंदाणिं।
विविहाइं कक्केयणचामीयरविद्दुममयाणिं।।२१५७।।
सम्मलितरुणो अंकुरकुसुमफलाणिं विचित्तरयणाणिं।
पणवण्णसोहिदाणिं णिरुवमरूवाणि रेहंति।।२१५८।।
जीउप्पत्तिलयाणं कारणभूदो अणाइणिहणो सो।
सम्मलिरुक्खो चामरकिंकिणिघंटादिकयसोहो।।२१५९।।
तद्दक्खिणसाहाए जिणिंद भवणं विचित्तरयणमयं।
चउहिदतिकोसउदयं कोसायामं तदद्धवित्थारं।।२१६०।।
।को.३/४। १।१/२।
जं पंडुगजिणभवणे भणियं णिस्सेसवण्णणं किं पि।
एदस्सि णादव्वं सुरदुंदुभिसद्दगहिरयरे।।२१६१।।
सेसासुं साहासुं कोसायामा तदद्धविक्खंभा।
पादोणकोसतुंगा हवंति एक्केक्कपासादा।।२१६२।।
। को १।१/२।३/४।

शाखाओं में मरकत, वैडूर्य , इन्द्रनील , कर्केतन, सुवर्ण और मूंगे से निर्मित विविध प्रकार के पत्ते हैं।।२१५७।।

शाल्मली वृक्ष के विचित्र रत्नस्वरूप और पांच वर्णों से शोभित अनुपम रूपवाले अंकुर, फूल एवं फल शोभायमान हैं।।२१५८।।

वह शाल्मलीवृक्ष स्वयं अनादिनिधन होकर भी जीवों की उत्पत्ति एवं नाश का कारण होता हुआ चामर, किंकिणी और घंटादि से शोभायमान है ।।२१५९।।

उसकी दक्षिण शाखा पर चार से भाजित तीन कोस प्रमाण ऊंचा, एक कोस लंबा और लंबाई से आधे विस्तार वाला विचित्र रत्नमय जिनभवन है।।२१६०।।
। को. ३/४। १/२।

पाण्डुक वन में स्थित जिनभवन के विषय में जो कुछ भी वर्णन किया गया है वही सम्पूर्ण वर्णन देवदुंदुभी बाजों के शब्दों से अतिशय गंभीर इस जिनेन्द्रभवन के विषय में जानना चाहिये ।।२१६१।।

अवशिष्ट शाखाओं पर एक कोस लंबे , इससे आधे विस्तारवाले और पौन कोस ऊंचे एक एक प्रासाद हैं।।२१६२।। । को.१।१/२।३/४।

चउतोरणवेदिजुदा रयणमया विविहदिव्वधूवघडा।
पजलंतरयणदीवा ते सव्वे धयवदाइण्णा।।२१६३।।
सयणासणपमुहाणिं भवणेसुं णिम्मलाणि विरजाणिं।
पकिदिमउवाणि तणुमणण यणाणदणसरूवाणिं।।२१६४।।
चेट्ठदि तेसु पुरेसुं वेणू णामेण वेंतरो देओ।
बहुविहपरिवारजुदो दुइज्जओ वेणुधारि त्ति।।२१६५।।
को.३/४।१।१/२।
सम्मद्दंसणसुद्धा सम्माइट्ठीण वच्छला दोण्णि।
ते दसचाउत्तुंगा पत्तेक्कं पल्लएक्काऊ।।२१६६।।
सम्मलिदुमस्स बारस समंतदो होंति दिव्ववेदीओ।
चउगोउरजुत्ताओ फुरंतवररयणसोहाओ।।२१६७।।
उस्सेधगाउदेणं बेगाउदमेत्तउस्सिदा ताओ।
पंचसया चावाणिं रुंदेणं होंति वेदीओ।।२१६८।।
कुलगिरिसरिया सुप्पहणामस्स य सम्मलिदुमस्स।
चेट्ठदि उववणसंडाइण्णो स खु सम्मलीरुक्खो।।२१६९।।

वे सब रत्नमय प्रासाद चार तोरणवेदियों से सहित, विविध प्रकार के दिव्य धूपघटों से संयुक्त, जलते हुए रत्नदीपकों से प्रकाशमान और ध्वजा-पताकाओं से व्याप्त हैं।।२१६३।।

इन भवनों में निर्मल , धूलिसे रहित, शरीर, मन एवं नयनों को आनन्ददायक और स्वभाव से मृदुल शय्यायें व आसनादिक स्थित हैं।।२१६४।।

उन पुरों में बहुत प्रकार के परिवार से सहित वेणु नामक व्यन्तर देव और द्वितीय वेणुधारी देव रहता है।।२१६५।।

सम्यग्दर्शन से शुद्ध और सम्यग्दृष्टियों से प्रेम करने वाले उन दोनों देवों में से प्रत्येक दश धनुष ऊँचे व एक पल्यप्रमाण आयु से सहित हैं।।२१६६।।

शाल्मलीवृक्ष के चारों तरफ चार गोपुरों से युक्त और प्रकाशमान उत्तम रत्नों से सुशोभित बारह दिव्य वेदियां है।।२१६७।।

वे वेदियां उत्सेधकोस से दो कोसमात्र ऊंची और पांचसौ धनुषप्रमाण विस्तार से सहित हैं।।२१६८।।

इस प्रकार कुलगिरिवेदिकासदृश ही ये सुप्रभ नामक शाल्मलीवृक्ष की वेदिकायें हैं। वह शाल्मलीवृक्ष (प्रथम वेदिका के भीतर) उपवनखंडों से आकीर्ण स्थित है।।२१६९।।

तत्तो बिदिया भूमी उववणसंडेहिं विविहकुसुमेहिं।
पोक्खरणीवावीहिं सारसपहुदीहिं रमणिज्जा।।२१७०।।
बिदियं व तदियभूमी णवरि विसेसो विचित्तरयणमया।
अट्ठुत्तरसयसम्मलिरुक्खा तीए समंतेणं।।२१७१।।
अद्धेण पमाणेणं ते सव्वे होंति सुप्पहाहिंतो।
एदेसुं चेट्ठंते वेणुदुगाणं महामण्णा।।२१७२।।
तदियं व तुरिमभूमी चउतोरणउवरिसम्मलीरुक्खा।
पुव्वदिसाए तेसुं चउदेवीओ य वेणुजुगलस्स।।२१७३।।
।४।२।२।
तुरिमं व पंचममही णवरि विसेसो ण सम्मलीरुक्ख।
तत्थ भंवति विचित्ता वावीओ विविहरूवाओ।।२१७४।।
छट्ठीए वणसंडो सत्तमभूमीए चउदिसाभागे।
सोलससहस्सरुक्खा वेणुजुगलस्संगरक्खाणं।।२१७५।।
।८०००।८०००।
सामाणियदेवाणं चत्तारो होंति सम्मलिसहस्स।
पवणेसाणदिसासुं उत्तरभागम्मि वेणुजुगलस्स।।२१७६।।
।२०००।२०००।

इसके आगे द्वितीय भूमि विविध प्रकार के फूलों वाले उपवनखण्डों , पुष्करिणियों, वापियों और सारसादिकों से रमणीय है।।२१७०।।

द्वितीय भूमि के समान तृतीय भूमि भी है। परन्तु विशेषता केवल यह है कि तृतीय भूमि में चारों ओर विचित्र रत्नों से निर्मित एक सौ आठ शाल्मलीवृक्ष हैं।।२१७१।।

वे सब वृक्ष सुप्रभवृक्ष की अपेक्षा आधे प्रमाण से सहित हैं। इनके ऊपर वेणु और वेणुधारी इन दोनों के महामान्य देव निवास करते हैं।।२१७२।।

तृतीय भूमि के समान चतुर्थ भूमि भी है । इसकी पूवदिशा में चार तोरणोंपर शाल्मलीवृक्ष हैं, जिनपर वेणुयुगल की चार देवियां रहती हैं।।२१७३।। ४।२।२।

चतुर्थ भूमि के समान पांचवी भूमि भी है। विशेष केवल यह है कि इस भूमि में शाल्मलीवृक्ष तो नहीं है, परन्तु विविध रूपवाली विचित्र वापियां हैं।।२१७४।।

छठी भूमि में वनखण्ड और सातवीं भूमि के भीतर चारों दिशाओं में वेणुयुगल के अंगरक्षक देवों के सोलह हजार वृक्ष हैं। ।२१७५।। ।८०००।८०००।

(आठवीं भूमि में) वायव्य, ईशान और उत्तरदिशाभाग में वेणुयुगल के सामानिक देवों के चार हजार शाल्मलीवृक्ष हैं।।२१७६।। ।२०००।२०००।

बत्तीससहस्साणिं सम्मलिरुक्खाणि अणलदिब्भाए।
भूमीए णवमीए अब्भंतरदेवपरिसाणं।।२१७७।।
।१६०००।१६०००।।
पुह पुह वीससहस्सा सम्मलिरुक्खाण दक्खिणे भागे।
दसमखिदीए मज्झिमपरिससुराणं च वेणुजुगे।।२१७८।।
।२००००।२००००।
पुह चउवीससहस्सा सम्मलिरुक्खाण णइरिदिविभागे।
एक्कारसममहीए बाहिरपरिसामराण दोण्णं पि।।२१७९।।
सत्तेसु य अणिएसुं अधिवइदेवाण सम्मलीरुक्खा।
बारसमाए महीए सत्त च्चिय पच्छिमदिसाए।।२१८०।।
।७।
लक्खं चालसहस्सा वीसुत्तरसयजुदा य ते सव्वे।
रम्मा अणाइणिहणा संमिलिदा सम्मलीरुक्खा।।२१८१।।
।१४०१२०।।
तोरणवेदीजुत्ता सपादपीढा अकिट्टिमायारा।
वररयणखचिदसाहा सम्मलिरुक्खा विरायंति।।२१८२।।
वज्जिंदणीलमरगयरविकंतमयंककंतपहुदीहिं।
णिण्णासिअंधयारं सुप्पहरुक्खस्स भादि थलं।।२१८३।।

नवमी भूमि के भीतर अग्निदिशा में अभ्यन्तर पारिषद देवों के बत्तीस हजार शाल्मलीवृक्ष हैं।।२१७७।। ।१६०००।१६०००।

दशवीं पृथिवी के दक्षिणभाग में वेणुयुगलसम्बन्धी मध्यम पारिषद देवों के पृथक् पृथक् बीस हजार शाल्मलीवृक्ष हैं।।२१७८।। ।२००००।२००००।

ग्यारहवीं भूमि के नैऋत्य दिग्विभाग में उक्त दोनों देवों के बाह्य पारिषद देवों के पृथक्-पृथक् चौबीस हजार शाल्मलीवृक्ष है।।२१७९।। २४०००।२४००००।

बारहवीं भूमिमें पश्चिमदिशा की ओर सात अनीकों के अधिपति देवों के सात ही शाल्मलीवृक्ष हैं ।।२१८०।। । ७।

रमणीय और अनादिनिधन वे सब शाल्मलीवृक्ष मिलकर एक लाख चालीस हजार एक सौ बीस हैं।।२१८१।। ।१४०१२०।

तोरणवेदियों से युक्त, पादपीठों से सहित, अकृत्रिम आकार के धारक और उत्तम रत्नों से खचित शाखाओं से संयुक्त वे सब शाल्मलीवृक्ष विराजमान हैं।।२१८२।।

सुप्रभवृक्ष का स्थल वज्र, इन्द्रनील, मरकत, सूर्यकान्त और चन्द्रकान्तप्रभृति मणिविशेषों से अन्धकार को नष्ट करता हुआ सुशोभित होता है।।२१८३।।

सुप्पहथलस्स विउला समंतदो तिण्णि होंति वणसंडा।
विविहफलकुसुमपल्लवसोहिल्लविचित्ततरुछण्णा।।२१८४।।
तेसुं पढमम्मि वणे चत्तारो चउदिसासु पासादा।
चउहिदतिकोसउदया कोसायामातदद्धवित्थारा।।२१८५।।
।३/४।१।१/२।।
भवणाणं विदिसासुं पत्तेक्कं होति दिव्वरूवाणं।
चउ चउ पोक्खरणीओ दसजोयणमेत्तगाढाओ।।२१८६।।
पणवीसजोयणाइं रुंदं पण्णास ताण दीहत्तं।
विविहजलणिवहमंडिदकमलुप्पलकुमुदसंछण्णं।।२१८७।।
मणिमयसोवाणाओ जलयरचत्ताओ ताओ सोहंति।
अमरमिहुणाण कुंकुमपंकेणं पिंजरजलाओ।।२१८८।।
पुह पुह पोक्खरणीणं समंतदो होंति अट्ठ कूडाणिं।
एदाण उदयपहुदिसु उवएसो संपइ पणट्ठो।।२१८९।।
वणपासादसमाणा पासादा होंति ताण उवरिम्मिं।
एदेसु चेट्ठंते परिवारा वेणुजुगलस्स।।२१९०।।

सुप्रभस्थल के चारों ओर विविध प्रकार के फल , फूल और पत्तोंसे शोभित ऐसे नाना प्रकार के वृक्षों से व्याप्त तीन विस्तृत वनखण्ड हैं।।२१८४।।

उनमें से प्रथम वन के भीतर चारों दिशाओं में चार से भाजित तीन कोस प्रमाण ऊंचे, एक कोस लंबे और इससे आधे विस्तार वाले चार प्रासाद हैं।।२१८५।।

।को.३/४।१।१/२।

दिव्य स्वरूप के धारक इन प्रत्येक भवनों की विदिशाओं में दश योजनमात्र गहरी चार चार पुष्करिणी हैं।।२१८६।।

जलसमूह से मंडित विविध प्रकार के कमल, उत्पल, और कुमुदों से व्याप्त उन पुष्करिणियों का विस्तार पच्चीस योजन व लंबाई पचास योजन मात्र है।।२१८७।।

वे पुष्करिणियां मणिमय सोपानों से सुंदर, जलचर जीवों से परित्यक्त और देवयुगलों के कुकुमपंक से पीतजलवाली हैं।।२१८८।।

पुष्करिणियों के चारों ओर पृथक्-पृथक् आठ कूट हैं। इन कूटों की उंचाई आदि का उपदेश इस समय नष्ट हो चुका है।।२१८९।।

उन कूटों के ऊपर वनप्रासादों के समान प्रासाद हैं। इनमें वेणुयुगल के परिवार रहते हैं।।२१९०।।

जंबूवृक्ष पर जिनमंदिर

मंदरउत्तरभागे दक्खिणभागम्मि णीलसेलस्स।
सीदाय दोतडेसुं पच्छिमभागम्मि मालवंतस्स।।२१९१।।

पुव्वाए गंधमादणसेलाए दिसाय होदि रमणिज्जो।
णामेण उत्तरकुरू विक्खादो भोगभूमि त्ति।।२१९२।।

देवकुरुवण्णणाहिं सरिसाओ वण्णणाओ एदस्स।
णवरि विसेसो सम्मलितरुवणप्फदी तत्थ ण हवंति।।२१९३।।

मंदरईसाणदिसाभाए णीलस्स दक्खिणे पासे।
सीदाए पुव्वतडे पच्छिमभायम्मि मालवंतस्स।।२१९४।।

जंबूरुक्खस्स थलं कणयमयं होदि पीढवरजुत्तं।
विविहवररयणखचिदा जंबूरुक्खा भवंति एदस्सिं।।२१९५।।
सामलिरुक्खसरिच्छं जंबूरुक्खाण वण्णणं सयलं।
णवरि विसेसा वेंतरदेवा चेट्ठंति अण्णण्णा।।२१९६।।
तसु पहाणरुक्खे जिणिंदपासादभूसिदे रम्मे।
आदरअणादरक्खा णिवसंते वेंतरा देवा।।२१९७।।

जंबूवृक्ष पर जिनमंदिर

मन्दरपर्वत के उत्तर, नीलशैल के दक्षिण, माल्यवन्त के पश्चिम और गन्धमादन शैल के पूर्व दिग्विभाग में सीतानदी के दोनों किनारों पर 'भोगभूमि' इस प्रकार से विख्यात रमणीय उत्तरकुरु नामक क्षेत्र है।।२१९१-२१९२।।

इसका सम्पूर्ण वर्णन देवकुरुके वर्णन के ही समान है। विशेषता केवल यह है कि वहां पर शाल्मलीवृक्ष के परिवार नहीं है।।२१९३।।

मन्दरपर्वत के ईशानदिशा भाग में , नीलगिरि के दक्षिणपार्श्वभाग में और माल्यवंत के पश्चिमभाग में सीतानदी के पूर्व तटपर उत्तम पीठ से सहित सुवर्णमय जंबूवृक्ष का स्थल है। **इस स्थल पर विविध प्रकार के उत्कृष्ट रत्नों से खचित जम्बूवृक्ष हैं**।।२१९४,२१९५।।

जंबूवृक्षों का संपूर्ण वर्णन शाल्मलीवृक्षों के ही समान है। विशेषता केवल इतनी है कि यहां व्यन्तर देव अन्य-अन्य रहते हैं।।२१९६।।

उनमें जिनेन्द्रप्रासाद से भूषित और रमणीय प्रधान जंबूवृक्ष के ऊपर आदर एवं अनादर नामक व्यन्तरदेव निवास करते हैं।।२१९७।।

सम्मद्दंसणसुद्धा सम्माइट्ठीण वच्छला दोण्णि।
सयलं जंबूदीवे भुंजंति एक्कछत्ती णं।।२१९८।।

जम्बूवृक्ष एवं शाल्मलीवृक्षों पर जिनमंदिर

(लोक विभाग ग्रंथ से[१])

मेरोः पूर्वोत्तरस्यां वै सीतापूर्वतटात्परम्।
आसन्नं नीलशैलस्य स्थलं जम्ब्वाः प्रकीर्तितम्।।१२६।।
अर्धयोजनमुद्विद्धा उद्वेधाष्टमरुंध्रिकाः।
वेदिका रत्नसंकीर्णा स्थलस्योपरि सर्वतः।।१२७।।
। १/१६।
स्थले सहस्रार्धपृथौ मध्येऽष्टबहले पुनः।
अन्ते द्विकोशबहले जाम्बूनदमये शुभे।।१२८।।
द्वादशाष्टौ च चत्वारि मूलमध्योर्ध्वविस्तृता।
पीठिकाष्टोच्छ्रिता तस्या द्वादशाम्बुजवेदिकाः।।१२९।।
द्वियोजनोच्छ्रितस्कन्धा मूले गव्यूतिविस्तृता।
अष्टयोजनशाखा सा त्ववगाढार्धयोजनम्।।१३०।।
। क्रो १।

सम्यग्दर्शन से शुद्ध और सम्यग्दृष्टियों के प्रेमी वे दोनों देव सम्पूर्ण जम्बूद्वीप को एकछत्री सम्राट् के समान भोगते हैं।।२१९८।।

जम्बूवृक्ष एवं शाल्मलीवृक्षों पर जिनमंदिर

मेरु पर्वत के पूर्व-उत्तर (ईशान) कोण में सीता नदी के पूर्व तट पर नील पर्वत के पास में जंबूवृक्ष का स्थल बतलाया गया है।।१२६।। इस स्थल के ऊपर सब ओर आधा योजन ऊँची और ऊँचाई के आठवें भाग (१/१६ यो.) प्रमाण विस्तारवाली रत्नों से व्याप्त एक वेदिका है।।१२७।। पाँच सौ योजन विस्तार वाले और मध्य में आठ योजन तथा अन्त में दो कोस बाहल्य से संयुक्त उस सुवर्णमय उत्तम स्थल के ऊपर मूल में, मध्य में और ऊपर यथाक्रम से बारह, आठ और चार योजन विस्तृत तथा आठ योजन ऊँची जो पीठिका है उसके बारह पद्मवेदिकाएँ हैं।।१२८-१२९।। इस स्थल के ऊपर जो जंबूवृक्ष स्थित है उसका स्कंध (तना) दो योजन ऊँचा, मूल में एक कोस विस्तृत और आधा योजन अवगाह से संयुक्त है। उसकी आठ योजन दीर्घ चार शाखाएँ हैं।।१३०।।

१. लोकविभाग ग्रंथ पृ १५ से १७ तक।

अश्मगर्भस्थिरस्कन्धा वज्रशाखा मनोरमा।
भ्राजते राजितैः पत्रैरङ्कुरैर्मणिजातिभिः।।१३१।।
फलैर्मृदङ्गसंकाशैर्जम्बूः स्तूपसमाकृतिः।
पृथिवीपरिणामा सा जीवावक्रान्तिजातिका(?)।।१३२।।
उत्तरस्यां तु शाखायामर्हदायतनं शुभम्।
तिसृष्वन्यासु वेश्मानि यादृरा नादराख्ययोः।।१३३।।
तस्या जम्ब्वा अधस्तात्तु त्रिंशतं विस्तृतानि हि।
उच्छ्रितानि शतास्यार्धं भवनान्युक्तदेवयोः।।१३४।।
आरभ्य बाह्यतः शून्यं प्रथमे च द्वितीयके।
तृतीयेऽपि च देवानामष्टाधिकशतद्रुमाः।।१३५।।
चतुर्थे प्राक् च देवीनां चतुर्वृक्षाश्च पञ्चमे।
वनं वाप्यश्चतुष्कोणवृत्ताद्याः षष्ठके नभः।।१३६।।
प्रत्येकं च चतुर्दिक्षु सप्तमे तनुरक्षिणां।
सहस्राणां च चत्वारि वृक्षास्तिष्ठन्ति मञ्जुलाः।।१३७।।
। मिलित्वा १६०००।

हरित् मणिमय स्थिर स्कन्धवाला एवं वज्रमय शाखाओं से मनोहर वह वृक्ष विविध मणिभेदों से शोभायमान पत्रों एव अंकुरों से सुशोभित है।।१३१।।

मृदंग जैसे फलों से स्तूप के समान आकृति को धारण करने वाला वह जंबूवृक्ष पृथिवी के परिणामस्वरूप है।।१३२।।

उसकी उत्तर दिशागत शाखा के ऊपर उत्तम जिनभवन तथा अन्य तीन शाखाओं के ऊपर आदर और अनादर नामक व्यन्तर देवों के भवन हैं।।१३३।।

उस जंबूवृक्ष के नीचे तीन सौ योजन विस्तृत और पचास योजन ऊँचे उक्त दोनों देवों के भवन हैं।।१३४।।

उपर्युक्त बारह पद्मवेदिकाओं में बाह्य वेदिका की ओर से प्रारम्भ करके प्रथम और द्वितीय अन्तराल में शून्य और तृतीय अन्तराल में देवों के एक सौ आठ वृक्ष हैं।।१३५।।

चतुर्थ अन्तराल में पूर्व दिशा में देवियों के चार वृक्ष, पंचम अन्तराल में वन व चतुष्कोण एवं गोल आदि वापियाँ तथा छठे अन्तराल में शून्य है।।१३६।।

सातवें अन्तराल में चारों दिशाओं में से प्रत्येक दिशा में तनुरक्षक देवों के सुन्दर चार हजार वृक्ष स्थित हैं।।१३७।।

आठवें अन्तराल में ईशान, उत्तर और वायु दिशाओं में सामानिक देवों के सब

सामानिकसुराणां स्युरष्टमे पिण्डिता द्रुमाः।
ईशाने चोत्तरे वाते सहस्राणां चतुष्टयम्।।१३८।।
नवमे दशमे चैकादशे वह्नौ च दक्षिणे।
नैऋत्यां त्रिपरिषदामन्तर्मध्यान्तवर्तिनाम्।।१३९।।
द्वात्रिंशच्च सहस्राणां चत्वारिंशत्तथा पुनः।
चत्वारिंशत्तथाष्टाग्रा जम्बूवृक्षा यथाक्रमम्।।१४०।।
सेनामहत्तराणां च द्वादशे सप्त पश्चिमे।
पद्मस्य परिवारेभ्यः पञ्चाग्रा मुख्यसंयुता।।१४१।।
।मुख्यसहितपरिवारवृक्षाः १४०१२०।
दक्षिणापरतो मेरोः सीतोदापश्चिमे तटे।
आसन्नं निषधस्यैव स्थलं रूप्यमयं शुभम्।।१४२।।
तत्र शाल्मलिराख्याता जम्बूसदृशवर्णना।
तस्या दक्षिणशाखायां सिद्धायतनमुत्तमम्।।१४३।।
शेषासु दिक्षु वेश्मानि त्रीणि तत्र सुरावपि।
वेणुश्च वेणुधारी च देवकुर्वधिवासिनौ।।१४४।।

मिलकर चार हजार वृक्ष हैं।।१३८।।

नौवें, दशवें और ग्यारहवें अन्तराल में अग्नि, दक्षिण और नैऋत्य दिशाओं में अभ्यन्तर, मध्यम और बाह्य पारिषद देवों के यथा क्रम से बत्तीस हजार, चालीस हजार और अड़तालीस हजार जम्बूवृक्ष हैं।।१३९-१४०।।

बारहवें अन्तराल में पश्चिम दिशा में सेनामहत्तरों के सात वृक्ष हैं। पद्म के परिवार पद्मों की अपेक्षा ये जम्बूवृक्ष एक मुख्य तथा चार अग्रदेवियों के इस प्रकार पाँच वृक्षों से अधिक हैं, **अर्थात् वे इन मुख्य वृक्षों से सहित परिवार वृक्ष १,४०,१२० हैं।**।१४१।।

मेरु के दक्षिण-पश्चिम में सीतोदा के पश्चिम तटपर निषध पर्वत के समीप में उत्तम रजतमय स्थल है।।१४२।।

वहां पर शाल्मलि वृक्ष का अवस्थान बतलाया गया है। उसका वर्णन जंबूवृक्ष के समान है। उसकी दक्षिण शाखा पर उत्तम सिद्धायतन है।।१४३।।

शेष दिशागत शाखाओं पर तीन भवन हैं। उनमें देवकुरु अधिवासी वेणु और वेणुधारी देव रहते हैं ।।१४४।।

नीलतो दक्षिणस्यां तु सहस्त्रे कूटयुग्मकम्।
सीतायाः प्राक्तटे चित्रं विचित्रमपरे तटे।।१४५।।
।१०००।
निषधस्योत्तरस्यां च सीतोदायास्तटद्वये।
पुरस्ताद्यमकं कूटं मेघकूटं तु पश्चिमम्।।१४६।।
सहस्त्रं विस्तृतं मूले मध्ये तत्तुर्यहीनकम्।
शिखरेऽर्धसहस्त्रं तु सहस्त्रं शुद्धमुच्छ्रितम्।।१४७।।
।१०००। ७५०। ५००।
प्रमाणेनैवमेकैकं कूटमाहुर्महर्षयः।
कूटसंज्ञासुरास्तत्र मोदन्ते सुखिनः सदा।।१४८।।
सार्धे सहस्त्रे नीलाद् द्वे नीलनामा ह्रदस्ततः।
कुरुनामा च चन्द्रश्च तस्मादैरावतः परम्।।१४९।।
। २५००।
माल्यवान् दक्षिणो (णे) सहस्त्रार्धान्तराश्च ते।
पद्मह्रदसमा मानैरायता दक्षिणोत्तरम्।।१५०।।
।५००।

नील पर्वत से दक्षिण की ओर हजार (१०००) योजन जाकर सीता महानदी के पूर्व तटपर चित्र और पश्चिम तटपर विचित्र नामक दो कूट हैं।।१४५।।

निषध पर्वत की उत्तर दिशा में भी सीतोदा महानदी के दोनों तटों में से पूर्व तटपर यमककूट और पश्चिम तटपर मेघकूट स्थित है।।१४६।।

इन कूटों का विस्तार मूल में एक हजार (१०००) योजन, मध्य में उससे चतुर्थ भाग हीन अर्थात् साढ़े सात सौ (७५०) योजन और शिखर पर अर्ध सहस्त्र (५००) योजन प्रमाण है। ऊँचाई उनकी शुद्ध एक हजार योजन मात्र है।।१४७।।

इस प्रकार महर्षि जन उक्त कूटों में से प्रत्येक कूट का प्रमाण बतलाते हैं। उनके ऊपर सदा सुखी रहने वाले कूटनामधारी देव आनंदपूर्वक रहते हैं।।१४८।।

नील पर्वत के दक्षिण में सार्ध दो हजार अर्थात् अढ़ाई हजार (२५००) योजन जाकर नील, कुरु, चन्द्र उसके आगे ऐरावत और माल्यवान् ये पाँच द्रह सीता नदी के मध्य में हैं। ये प्रमाण में पद्मद्रह के समान होते हुए दक्षिण-उत्तर आयत हैं। इनके मध्य में पाँच सौ (५००) योजन का अन्तर है।।१५९-१५०।।

जम्बूद्वीप में जम्बूवृक्ष पर जिनमंदिर

(तत्त्वार्थवार्तिक ग्रंथ से[१])

सूत्र—जम्बूद्वीपलवणोदादयः शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ।।७।।

आह-कुतः पुनरियं जम्बूद्वीपसंज्ञेति ? उच्यते —

प्रतिविशिष्टजम्बूवृक्षासाधारणाधिकरणत्वाज्जम्बूद्वीपः।।१।।

अयं हि द्वीपः प्रतिविशिष्टस्य जम्बूवृक्षस्य सपरिवारस्यासाधारणधिकरणत्वं बिभर्ति नान्ये धातकीखण्डादयो द्वीपास्ततोऽस्य तत्साहचर्यात् जम्बूद्वीप इतिसंज्ञा अनादिकालप्रवृत्ता। तद्यथा—उत्तरकुरुमध्ये जगती पञ्चयोजनशतायामविष्कम्भा तत्त्रिगुणसातिरेकपरिक्षेपा ततःप्रदेशहान्या बहिः परिहीयमाणा मध्ये द्वादशयोजनबाहल्या, अन्ते कोशद्वयबाहल्या सा चैकया पद्मवरवेदिकया जाम्बूनदमय्या परिक्षिप्ता । तस्या बहुदेशमध्यभागे नानारत्नमयमेकं पीठमष्टयोजनायामं चतुर्योजनविष्कम्भं तावदुच्छ्रायं द्वादशभिः पद्मवरवेदिकाभिः परिक्षिप्तम्।तासां च पद्मवरवेदिकानां प्रत्येकं चत्वारि तोरणानि श्वेतानि वरकनकस्तूपिकानि,तस्योपरि मणिमयमुपपीठं योजनायामविष्कम्भं

जम्बूद्वीप में जम्बूवृक्ष पर जिनमंदिर

सूत्रार्थ—तिर्यगलोक—मध्यलोक में जम्बूद्वीप, लवणसमुद्र आदि शुभ नाम वाले असंख्यात द्वीप समुद्र हैं।

प्रश्न—इसका जम्बूद्वीप यह नाम क्यों पड़ा हैं ?

उत्तर—अतिविशाल जम्बूवृक्ष का असाधारण आधार होने से यह द्वीप जम्बूद्वीप कहलाता है।

यह द्वीप प्रतिविशिष्ट सपरिवार जम्बूवृक्ष के असाधारण अधिकरण को धारण करता है, अन्य धातकीखण्ड आदि जम्बूवृक्ष को धारण नहीं करते हैं—इसलिये जम्बूवृक्ष के साहचर्य से यह जम्बूद्वीप कहलाता है। अथवा जम्बूद्वीप यह नाम अनादि काल से प्रवृत्त हैं। जैसे-उत्तरकुरु नामक उत्कृष्ट भोगभूमि के मध्य में भूमि पर पाँच सौ योजन लम्बी-चौड़ी तिगुनी परिधि वाली जगती (एक गोलाकार भूमि) है। यह भूमि एक-एक प्रदेश की हानि से बाहर में हीन-हीन (कम) होने से मध्य में १२ योजन मोटी और अन्त में दो कोस मोटी रह जाती है। यह जगती एक सुवर्णमयी पद्मवरवेदिका से वेष्टित है ।

तत्त्वार्थवार्तिक पृ.-४६०, ४७१।

कोशद्वयोच्छ्रायम्। तन्मध्येड् जम्बूवृक्षःसुदर्शनाख्यो योजनद्वयोच्छ्रितस्कन्धः षड्योजनोत्सेधविटपः,मध्ये षड्योजनविष्कम्भपरिमण्डलःअष्टयोजनायामः तदर्ध-मुच्छ्रितानां जम्बूनामष्टशतेन परिवृतः सुरवरवनिताक्रान्तः, तद्योगाज्जम्बूद्वीपः।

तत्र सीतायाः प्राग्दिग्भागे जम्बूवृक्षो वर्णितः । तस्योत्तरस्यां दिशि शाखाया-मर्हदायतनं क्रोशायामार्धकोशविष्कम्भदेशोनक्रोशोनकोशोत्सेधम् । प्राच्यां दिशि शाखायां तत्तुल्यप्रासादः, तत्र जम्बूद्वीपाधिपतिव्यन्तरेश्वरोऽनावृतनामा वसति। दक्षिणस्यां दिशि शाखायां प्रतीच्यां च प्रासादयोः शयनीयानि रमणीयानि। ततः पूर्वोत्तरोत्तरापरोत्तरासु दिक्ष्वनावृतदेवसामानिकानां चत्वारि जम्बूसहस्त्राणि। दक्षिणपूर्वस्यां दिशि अभ्यन्तर-परिषद्देवानां द्वात्रिंशत्सहस्त्राणि। दक्षिणास्यां मध्यमपरिषद्देवानां चत्वारिंशत्सहस्त्राणि। दक्षिणापरस्यां दिशि बाह्यपरिषद्देवानामष्टचत्वारिंशत्सहस्त्राणि । प्रतीच्यामनीक-महत्तराणां सप्तानां सप्तजम्ब्वः, चतसृणामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां जम्ब्वः चतस्त्रः।

उस जगती के मध्य भाग में आठ योजन लम्बा, चार योजन चौड़ा, चार योजन ऊँचा तथा १२ पद्मवरवेदिकाओं से वेष्टित नाना रत्नों से निर्मित एक पीठ है। प्रत्येक पद्मवरवेदिका में चार-चार शुभ्र तोरणद्वार हैं तथा उन तोरणद्वारों के ऊपर कनकमय स्तूप (बुर्ज) हैं। उस पीठ के ऊपर एक योजन लम्बा चौड़ा तथा दो कोस ऊँचा मणिमय उपपीठ (दूसरा छोटा पीठ) है। उस उपपीठ के मध्य भाग में दो योजन ऊँची पीठ (स्कंध) से युक्त छह योजन उत्सेध (ऊँची शाखाओं का धारक) और मध्य में छह योजन परिमण्डल से सुशोभित आठ योजन लम्बा सुदर्शन नामका जम्बूवृक्ष है। यह जम्बूवृक्ष चारों ओर अपने से आधे लम्बे चौड़े ऊंचे तथा देवांगनाओं से व्याप्त १०८ परिवार जम्बूवृक्षों से वेष्टित है, इसलिये जम्बूवृक्षों के योग से यह द्वीप जम्बूद्वीप कहलाता है।

उत्तरकुरु भोगभूमि में सीता नदी की पूर्वदिशा में जम्बूवृक्ष है। इसकी उत्तरदिशा की शाखा पर एक कोस लम्बा, आधा कोस चौड़ा और कुछ कम एक कोस ऊँचा अर्हंत आयतन (जिनभवन) है। पूर्वदिशा की शाखा पर उत्तरदिशा के जिनभवन के समान लम्बा, ऊँचा और चौड़ा एक मनोज्ञ महल है। इस प्रासाद में जम्बूद्वीप का अधिपति अनावृत नामका व्यन्तरेश्वर रहता है। उत्तर तथा दक्षिण दिशा की शाखाओं पर भी जिनभवन के तुल्य वर्णन वाला एक-एक प्रासाद है । उनमें अनावृत देव के रमणीय शय्या आसन आदि स्थित हैं। इस जंबूवृक्ष की पूर्व-उत्तर(वायव्य) दिशा में और पश्चिम-उत्तर (ईशान) दिशा में , अनावृत के (समान ही) सामानिक देवों के निवास से

पूर्वदक्षिणापरोत्तरासु षोडशसहस्त्रात्मरक्षदेवानां च षोडशसहस्त्राणि। एते सुदर्शन-जम्बूवृक्षस्य परिवारभूताः पूर्वोक्ताष्टशतेन सह समुदिताः एकं शतसहस्त्रं चत्वारिंश-त्सहस्त्राणि शतं चैकोन्नविंशम् । त एते सर्व एव जम्बूवृक्षाः पद्मवरवेदिकापरिवृताः सर्वरत्नकाञ्चन-परिणामाः मुक्तामणिहेमघण्टाजालमाल्यदाम- ध्वजपताकाछत्राधिच्छत्र-विभूषिताः। सुदर्शनाख्योऽसौ जम्बूवृक्षः पद्मवरवेदिकापरिक्षिप्तैस्त्रिभिर्वनषण्डैः परिक्षिप्तः।

युक्त चार हजार जंबूवृक्ष हैं । इसकी दक्षिण-पूर्व दिशा में अभ्यन्तर परिषद् देवों के बत्तीस हजार जंबूवृक्ष हैं । दक्षिण दिशा में मध्यम परिषद् देवों के चालीस हजार जंबूवृक्ष हैं। दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य) दिशा में बाह्य परिषद् देवों के अड़तालीस हजार जम्बूवृक्ष हैं। पश्चिम दिशा में सात अनीक अधिपति देवों के सात जम्बूवृक्ष हैं । सपरिवार अग्रमहीषियों के चार जम्बूवृक्ष और भी हैं। इनके अतिरिक्त पूर्व , दक्षिण, पश्चिम और उत्तर इन चारों दिशाओं में १६ हजार आत्मरक्षक देवों के १६ हजार जंबूवृक्ष हैं। इस प्रकार सुदशनमेरु संबंधी जंबूवृक्ष का परिवारवृक्ष पूर्वोक्त एक सौ आठ मिला देने से **एक लाख चालीस हजार एक सौ उन्नीस है। (मूलवृक्ष मिलाने पर १ लाख ४० हजार १२० होते हैं)** । ये सर्व जंबूवृक्ष चारों ओर पद्मवरवेदिका से वेष्टित हैं, सुवर्ण एवं रत्नों से निर्मित हैं; मोती, मणि, सुवर्ण, घण्टा, जालियाँ (गवाक्ष), माल्य (सुगन्धित पदार्थ), माला, ध्वजा-पताका और तीन छत्रों आदि से विभूषित हैं। सुदर्शन नामक यह जंबूवृक्ष पद्मवर वेदिका से वेष्टित तीन वनखण्डों से व्याप्त है ।

जम्बूद्वीप में जम्बूवृक्ष एवं शाल्मली वृक्ष की परिवार वृक्षों सहित संख्या

(१) जम्बूवृक्ष संबंधी कुल वृक्ष = १,४०,१२०
(२) शाल्मली वृक्ष संबंधी कुल वृक्ष = १,४०,१२०
जम्बूद्वीप के कुल वृक्ष = २,८०,२४०

दो लाख अस्सी हजार दो सौ चालीस

धातकीवृक्ष शाल्मलीवृक्ष जिनालय वन्दना

–नरेन्द्र छंद–

विजयमेरु ईशानदिशा में वृक्ष धातकी सोहे।
नैऋत दिश में वृक्ष शाल्मलि सुरगण का मन मोहे।।
इक इक के परिवार तरु दो, लाख सहस अस्सी हैं।
दोसौ अड़तीस इतने सब में, प्रतिमा शाश्वतकी हैं।।१।।

–नाराच छंद–

जिनेश बिंब एक सौ सुआठ सर्व वृक्ष में।
प्रमुख्यता धरे महान एक ही तरु इमें।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।२।।

अनादि हो अनन्त हो प्रसिद्ध सिद्ध रूप हो।
दयाल धर्मपाल तीन काल एक रूप हो।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।३।।

अलोक लोक में प्रधान तीन लोक नाथ हो।
अनेक रिद्धि के धनी सुभक्त के सनाथ हो।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।४।।

महान दीप्तिमान मोहशत्रु को कृपान हो।
प्रसन्न सौम्य आस्य[१] हो पवित्र हो पुमान हो ।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।५।।

दिनेश[२] तें विशेष तेज की महान राशि हो।
कुमोदनी भवीक हेतु तुम सुधानिवास[३] हो।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।६।।

१. मुख २. सूर्य ३. चन्द्र

भवाब्धि डूबते तिन्हें तुम्हीं सुकर्णधार हो।
गुणौघ[१] रत्न के समुद्र सार में सु सार हो।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।७।।

–दोहा–

तुम गुण गण मणि अगम हैं, को गण पावे पार।
ज्ञानमती गुण लव पढ़े, सो उतरे भव पार।।८।।

धातकीखण्डद्वीप में

धातकी एवं शाल्मली वृक्षों पर जिनमंदिर

(त्रिलोकसार ग्रंथ से)

धादइपुक्खरदीवा धाइदपुक्खरतरूहिं संजुत्ता।
तेसि च वण्णणा पुण जंबूदुमवण्णणं व हवे।।९३४।।

धातकीपुष्करद्वीपौ धातकीपुष्करतरुभ्यां संयुक्तौ।
तयोः च वर्णना पुनः जम्बूद्रुमवर्णना इव भवेत्।९३४।।

धावइ। धातकीखण्डपुष्करद्वीपौ धातकीपुष्करतरुभ्यां संयुक्तौ, तयोर्वृक्षयोर्वर्णना पुनर्जम्बूद्रुमवर्णानावद्भवेत्।।९३४।।

(जम्बूद्वीपपण्णत्ती ग्रंथ से[२])

दोण्हं मेरूण तहा दोण्हं इसुगारपव्वदाणं तु।
धादगिदुमाण दोण्हं दोण्हं वरसामलिदुमाणं।।२९।।

धातकीखण्डद्वीप में

धातकी एवं शाल्मली वृक्षों पर जिनमंदिर

गाथार्थ–धातकीखण्ड और पुष्करद्वीप क्रमशः धातकी और पुष्कर वृक्षों से संयुक्त हैं। इन दोनों वृक्षों का वर्णन जम्बूद्वीपस्थ जम्बूवृक्ष के वर्णन सदृश ही होता है।।९३४।।

(जम्बूद्वीपपण्णत्ती ग्रंथ से)

धातकी खण्ड में स्थित दो मेरु, दो इष्वाकार पर्वत, दो धातकी वृक्ष, दो शाल्मलि वृक्ष हैं।।२९।।

१. गुण समूह, २. जम्बूद्वीपपण्णत्ती ग्रंथ पृ. १८७ से १८८।

(तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ से[१])

उत्तरदेवकुरूसुं खेत्तेसुं तत्थ धादईरुक्खा।
चेट्ठंति य गुणणामो तेण पुढं धादईसंडो।।२६००।।
धादइतरूण ताणं परिवारदुमा भवंति एदेस्सिं।
दीवम्मि पंचलक्खा सट्ठिसहस्साणि चउसयासीदी।।२६०१।।
।५६०४८०।।
पियदंसणो पभासो अहिवइदेवा वंसति तेसु दुवे।
सम्मत्तरयणजुत्ता वरभूसणभूसिदायारा।।२६०२।।
आदरअणादरणं परिवारादो भवंति एदाणं।
दुगुणा परिवारसुरा पुव्वोदिदवण्णणेहिं जुदा।।२६०३।।

(लोकविभाग ग्रंथ से[२])

गिरयोऽर्धतृतीयस्था द्रुमवक्षारवेदिकाः।
अवगाढा विना मेरुं स्वोच्चयस्य चतुर्थकम्।।१३।।

(तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ से)

धातकीखण्डद्वीप के भीतर उत्तरकुरु और देवकुरु क्षेत्रों में धातकीवृक्ष स्थित हैं, इसी कारण इस द्वीप का 'धातकीखण्ड' यह सार्थक नाम है।।२६००।।

इस द्वीप में उन धातकी वृक्षों के परिवार वृक्ष पांच लाख साठ हजार चार सौ अस्सी हैं।।२६०१।। ५,६०,४८०।

उन वृक्षों पर सम्यक्त्वरूपी रत्न से संयुक्त और उत्तम भूषणों से भूषित आकृति को धारण करने वाले प्रियदर्शन और प्रभास नामक दो अधिपति देव निवास करते हैं।।२६०२।।

इन दोनों देवों के परिवार देव आदर और अनादर देवों के परिवारदेवों की अपेक्षा दुगुणे हैं जो पूर्वोक्त वर्णन से संयुक्त हैं।।२६०३।।

(लोकविभाग ग्रंथ से)

अढ़ाई द्वीप में मेरु पर्वत को छोड़कर शेष जो पर्वत, **वृक्ष ,** वक्षार और वेदिकायें स्थित हैं उनका अवगाढ अपनी ऊंचाई के चतुर्थ भाग १/४ प्रमाण है।।१३।।

१. तिलोयपण्णत्ति ग्रन्थ पृ. ४७०।
२. लोकविभाग ग्रंथ पृ. ६२।

विस्तृतानि हि कुण्डानि स्वावगाहं तु षड्गुणम्।
ह्रदनद्योऽवगाहाच्च पञ्चाशद्गुणविस्तृताः।।१४।।
।६०।१२०।२४०।।
उद्गतं स्वावगाहं तु चैत्यं सार्धशताहतम्।
जम्ब्वातुल्याः समाख्याता दशाप्यत्र महाद्रुमाः।।१५।।
सरकुण्डमहानद्यस्तथा पद्मह्रदा अपि।
अवगाहैः समाः पूर्वैर्व्यासैर्द्विर्द्विगुणाः परे।।१६।।

(तत्त्वार्थवार्तिक ग्रंथ से[१])

जम्बूद्वीपे यत्र जम्बूवृक्षः तत्र धातकीषण्डे धातकीवृक्षः। परिवाराश्च पूर्वोक्त-वर्णनाः। तन्निवासी द्वीपाधिपतिस्तत एव द्वीपस्य धातकीषण्ड इति नाम वेदितव्यम्।[१]

कुण्डों का विस्तार अपने अवगाह से छह गुणा (जैसे **१०×६=६०, २०×६=१२०, ४०×६=२४०**) तथा द्रह और नदियों का विस्तार अपने अवगाह से पचास गुणा है।।१४।।

चैत्यवृक्ष की ऊँचाई अपने अवगाह से डेढ़ सौ गुणी होती है। **अढ़ाई द्वीपों में स्थित दस ही महावृक्ष जंबूवृक्ष के समान कहे गये हैं** ।।१५।।

तालाब, कुण्ड, महानदियां तथा पद्मह्रद भी, ये अवगाह की अपेक्षा पूर्व अर्थात् जंबूद्वीपस्थ तालाब आदि के समान हैं। **परन्तु विस्तार में वे जंबूद्वीप के तालाब आदि से दूने दूने हैं**।।१६।।

(तत्त्वार्थवार्तिक ग्रंथ से)

जम्बूद्वीप में जहाँ जम्बूवृक्ष हैं, धातकीखण्ड में वहाँ धातकीवृक्ष हैं। इस वृक्ष का वर्णन तथा इसके परिवार वृक्ष जम्बूवृक्ष के समान हैं। उस वृक्ष पर निवास करने वाला द्वीपाधिपति (धातकीखण्ड का अधिपति) होने से इस द्वीप का नाम धातकीखण्ड जानना चाहिए।

१. तत्त्वार्थवार्तिक पृ. ५४२।।

धातकीखण्ड द्वीप में वृक्षों की संख्या

पूर्व धातकीखण्ड द्वीप

(१) धातकी वृक्ष संबंधी कुल वृक्ष = २,८०,२४०

(२) शाल्मलि वृक्ष संबंधी कुल वृक्ष = २,८०,२४०

कुल मिलाकर = २,८०, २,८०,२४० = ५,६०,४८० वृक्ष

पश्चिम धातकीखण्ड द्वीप

(१) धातकी वृक्ष संबधी कुल परिवार वृक्ष = २,८०,२४०

(२) शाल्मलि वृक्ष संबंधी कुल परिवार वृक्ष =२,८०,२४०

कुल मिलाकर = २,८०, २,८०,२४० = ५,६०,४८० वृक्ष

धातकीखण्डद्वीप संबंधी कुल वृक्ष =२,८०,२४० + २,८०,२४० + २,८०,२४० + २,८०,२४० = ११,२०,९६०

ग्यारह लाख बीस हजार नौ सौ साठ

जम्बूद्वीप में क्षेत्रों का विस्तार

क्रमांक	नाम	योजनों में	मीलों में
१	भरत	५२६ $\frac{६}{१९}$	२१०५२६३ $\frac{३}{१९}$
२	हैमवत	२१०५ $\frac{५}{१९}$	८४२१०५२ $\frac{१२}{१९}$
३	हरि	८४२१ $\frac{१}{१९}$	३३६८४२१० $\frac{१०}{१९}$
४	विदेह	३३६८४ $\frac{४}{१९}$	१३४७३६८४२ $\frac{२}{१९}$
५	रम्यक	८४२१ $\frac{१}{१९}$	३३६८४२१० $\frac{१०}{१९}$
६	हैरण्यवत	२१०५ $\frac{५}{१९}$	८४२१०५२ $\frac{१२}{१९}$
७	ऐरावत	५२६ $\frac{६}{१९}$	२१०५२६३ $\frac{३}{१९}$

धातकीखण्ड द्वीप में स्थित भरतादि क्षेत्रों का विस्तार

क्र.	क्षेत्र-नाम	अभ्यन्तर वि.	मध्य विष्कम्भ	बाह्य विष्कम्भ
१	भरत	६६१४ $\frac{१२९}{२१२}$ यो.	१२५८१ $\frac{३६}{२१२}$ यो.	१८५४७ $\frac{१५५}{२१२}$ यो.
२	हैमवत	२६४५८ $\frac{९२}{२१२}$ "	५०३२४ $\frac{१४४}{२१२}$ यो.	७४१९० $\frac{१९६}{२१२}$ यो.
३	हरि	१०५८३३ $\frac{१५६}{२१२}$ "	२०१२९८ $\frac{१५२}{२१२}$ यो.	२९६७६३ $\frac{१४८}{२१२}$ यो.
४	विदेह	४२३३३४ $\frac{२००}{२१२}$ "	८०५१९४ $\frac{१८४}{२१२}$ यो.	११८७०५४ $\frac{१६८}{२१२}$ यो.
५	रम्यक	१०५८३३ $\frac{१५६}{२१२}$ "	२०१२९८ $\frac{१५२}{२१२}$ यो.	२९६७६३ $\frac{१४८}{२१२}$ यो.
६	हैरण्यवत	२६४५८ $\frac{९२}{२१२}$ "	५०३२४ $\frac{१४४}{२१२}$ यो.	७४१९० $\frac{१९६}{२१२}$ यो.
७	ऐरावत	६६१४ $\frac{१२९}{२१२}$ "	१२५८१ $\frac{३६}{२१२}$ यो.	१८५४७ $\frac{१५५}{२१२}$ यो.

धातकीखण्ड द्वीप में विदेह क्षेत्र का मध्य विस्तार आठ लाख, पाँच हजार, एक सौ चौरानवे योजन है। पूर्व धातकीखण्ड व पश्चिम धातकीखण्ड में क्रम से विजयमेरु व अचलमेरु पर्वत हैं। ये मेरु तलभाग में दशहजार योजन विस्तृत है। इसके चारों तरफ भद्रसाल वन है। अतः दोनों तरफ अनुमानतः तीन-तीन लाख योजन विस्तृत देवकुरु-उत्तरकुरु भोगभूमि हैं।

इन्हीं में उत्तरकुरु में धातकीवृक्ष व देवकुरु में शाल्मलीवृक्ष हैं। वहाँ पर बहुत ही विस्तृत-अधिक जगह है। वहाँ पर इन वृक्षों के परिवारवृक्ष जम्बूद्वीप के जम्बूवृक्ष से दूने-दूने हैं। उन सभी में जिनमंदिर-जिनप्रतिमाएँ हैं। उन सबको कोटि-कोटि नमन।

पुष्करार्ध द्वीप में स्थित भरतादि क्षेत्रों का विस्तार

क्र.	क्षेत्र-नाम	अभ्यन्तर वि.	मध्य विष्कम्भ	बाह्य विष्कम्भ
१	भरत	४१५७९ $\frac{१७३}{२१२}$ यो.	५३५१२ $\frac{१९९}{२१२}$ यो.	६५४४६ $\frac{१३}{२१२}$ यो.
२	हैमवत	१६६३१९ $\frac{५६}{२१२}$ "	२१४०५१ $\frac{१६०}{२१२}$ यो.	२६१७८४ $\frac{५२}{२१२}$ यो.
३	हरि	६६५२७७ $\frac{१२}{२१२}$ "	८५६२०७ $\frac{४}{२१२}$ यो.	१०४७१३६ $\frac{२०८}{२१२}$ यो.
४	विदेह	२६६११०८ $\frac{४८}{२१२}$ "	३४२४८२८ $\frac{१६}{२१२}$ यो.	४१८८५४७ $\frac{१९६}{२१२}$ यो.
५	रम्यक	६६५२७७ $\frac{१२}{२१२}$ "	८५६२०७ $\frac{४}{२१२}$ यो.	१०४७१३६ $\frac{२०८}{२१२}$ यो.
६	हैरण्यवत	१६६३१९ $\frac{५६}{२१२}$ "	२१४०५१ $\frac{१६०}{२१२}$ यो.	२६१७८४ $\frac{५२}{२१२}$ यो.
७	ऐरावत	४१५७९ $\frac{१७३}{२१२}$ "	५३५१२ $\frac{१९९}{२१२}$ यो.	६५४४६ $\frac{१३}{२१२}$ यो.

इस पुष्करार्धद्वीप में विदेह क्षेत्र का विस्तार चौंतीस लाख योजन से अधिक है। पूर्व-पुष्करार्ध व पश्चिम पुष्करार्ध में क्रमशः मंदरमेरु व विद्युन्माली मेरु हैं। उनके चारों तरफ भद्रसाल वन हैं। मेरु के उत्तर-दक्षिण में उत्तरकुरु व देवकुरु भोगभूमियाँ हैं। इनमें ही पुष्करवृक्ष व शाल्मली वृक्ष हैं। इनके परिवार वृक्ष भी धातकीखण्ड की अपेक्षा दूने-दूने हैं। इन सभी में जिनमंदिर व जिनप्रतिमाएँ हैं। उन सबको कोटि-कोटि नमन।

पुष्करवृक्ष शाल्मलीवृक्ष जिनालय वन्दना

-नरेन्द्र छंद-

पुष्करतरु से अंकित पुष्कर, द्वीप जु सार्थक नामा।
सुरगिरि के दक्षिण-उत्तर में, भोग भूमि अभिरामा।।
उत्तरकुरु ईशान कोण में, पद्मवृक्ष मन मोहे।
देवकुरु नैऋत में शाल्मलि, तरु पे सुरगण सोहें।।१।।

(चाल-हे दीन बन्धु.....)

जय रत्नमयी वृक्ष ये अनादि अनंता।
जय पंचरत्न वर्ण सिद्धकूट धरंता।।
जय जय जिनेन्द्र देव के, जो भवन कहे हैं।
जय जय जिनेन्द्र मूर्तियां, जो पाप दहे हैं।।१।।
जिनमंदिरों में घंटिका औ किंकिणी बजे।
वीणा मृदंग बांसुरी, संगीत हैं सजे।।
मंगल कलश औ धूप घट अनेक धरे हैं।
जो देव देवियों के सदा चित्त हरे हैं।।२।।
रत्नों की स्वर्ण मोतियों की मालिकायें हैं।
कौशेय[१] वस्त्र सदृश रत्न की ध्वजायें हैं।।
उनमें बने हैं सिंह, हस्ति हंस बैल जो।
मयूर, चक्र, गरुड़, चन्द्र, सूर्य कमल जो।।३।।
इन दश प्रकार चिन्ह से चिन्हित हैं ध्वजायें।
जो भक्त गणों को सदा ही पास बुलायें।।
ये रत्नमयी होय के भी वायु से हिलें।
अद्भुत असंख्य रत्न हैं इस रूप में मिलें।।४।।
प्रत्येक जैनगेह में रचना अनंत है।
प्रत्येक में ही इक सौ आठ जैनबिंब हैं।।
प्रत्येक में तोरण दुवार[२] रत्न के बने।
जिनदेव मानतंभ[३] वहां मान को हनें।।५।।

१. रेशमी २. द्वार ३. मानस्तंभ

ये जैनभवन हैं सदा सन्मार्ग के दाता।
निज आश्रितों को सत्य में हैं मुक्ति प्रदाता।।
इन नाम के जपे से नशे भूत की बाधा।
व्यंतर पिशाच प्रेत क्रूर, गृहों की बाधा।।६।।
इनके करे जो दर्श वे भवसिंधु तरे हैं।
जो भक्ति से पूजन करें वे सौख्य भरे हैं।।
इस लोक में धन धान्य पुत्र पौत्र को पाते।
चक्रेश की सी संपदा पा मौज उड़ाते।।७।।
जिनधर्म में अतिगाढ़ प्रेम धारते सदा।
पर लोक में इन्द्रादि विभव पावते मुदा।।
पश्चात् यहां तीर्थ की पदवी को धार के।
तीर्थंकरों का धर्मचक्र जग में चलाके।।८।।
आर्हन्त्य विभव पाय के भगवंत बनेंगे।
वे मुक्ति वल्लभा के भी तो कंत बनेंगे।।
इस विध से नाथ आपकी कीर्ती को मैं सुनी।
अतएव शरण आपकी ली सुन के तुम धुनी।।९।।
बस एक आश आज मेरी पूरिये प्रभो।
मोहादि कर्म वैरियों को चूरिये प्रभो।।
बस मैं स्वयं निज आत्मा को शुद्ध करूंगा।
सम्यक्त्व शुद्ध 'ज्ञानमती' सिद्धि वरूंगा।।१०।।

–दोहा–

प्रभु तुम महिमा अगम है, तुम गुणरत्न अनंत।
इक गुण लव भी पाय मैं, तरूँ भवाब्धि अनंत।।११।।

पुष्करार्धद्वीप में
पुष्करवृक्ष एवं शाल्मली वृक्षों पर जिनमंदिर

(जम्बूद्वीपपण्णत्ति ग्रंथ से)

दोण्हं गिरिरायाजणं दोण्हं इसुगारणामसेलाणं।
सामलितरूण दोण्हं दोण्हं वरपउमरुक्खाणं[१]।।७५।।

(तत्त्वार्थवार्तिक ग्रंथ से)

सूत्र—पुष्करार्धे च ।।३४।

यत्र जम्बूवृक्षस्तत्र पुष्करं सपरिवारं वेदितव्यम्। तन्निवासी द्वीपाधिपतिः, तत एव तस्य द्वीपस्य नाम रूढं पुष्करद्वीप इति।

पुष्करार्धद्वीप में
पुष्करवृक्ष एवं शाल्मली वृक्षों पर जिनमंदिर

पुष्करवरद्वीप सम्बन्धी दो मेरु, दो इष्वाकार नामक शैल, दो शाल्मली वृक्ष, दो श्रेष्ठ पद्म (पुष्कर) वृक्ष हैं।।७५।।

(तत्त्वार्थवार्तिक ग्रंथ से)

सूत्रार्थ—आधे पुष्करद्वीप में भी भरतादिक्षेत्र एवं हिमवन् आदि पर्वत दो-दो हैं।।३४।।

जम्बूद्वीप **में जिस प्रकार** जम्बूवृक्ष हैं—उसी प्रकार परिवार, ऊँचाई आदि वाला पुष्करार्ध में पुष्कर नामक वृक्ष है। उस वृक्ष पर पुष्करद्वीप का अधिपति देव रहता है। पुष्करवृक्ष की अपेक्षा या रूढ़ि से इस द्वीप को पुष्कर कहते हैं।।५।।

पुष्करार्ध द्वीप में पुष्करवृक्ष एवं शाल्मली वृक्ष के परिवार वृक्षों सहित संख्या

पूर्व पुष्करार्ध द्वीप

(१) पुष्करवृक्ष संबंधी कुल वृक्ष = ५,६०,४८०
(२) शाल्मलिवृक्ष संबंधी कुल वृक्ष = ५,६०,४८०
कुल योग = ११,२०,९६०

---

१. जम्बूद्वीपपण्णत्ति पृ. १९२। २. तत्त्वार्थवार्तिक पृ. ५४२, ५४५।

पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप

(१) पुष्करवृक्ष संबंधी कुल वृक्ष = ५,६०,४८०
(२) शाल्मलिवृक्ष संबंधी कुल वृक्ष = ५,६०,४८०
कुल योग = ११,२०,९६०

पुष्करार्धद्वीप संबंधी कुल वृक्ष = ५,६०,४८०+ ५,६०,४८०+ ५,६०,४८० + ५,६०,४८० = २२,४१,९२०

बाईस लाख इकतालीस हजार नौ सौ बीस

ढाई द्वीप के वृक्षों की संख्या

जम्बूद्वीप

जम्बूवृक्ष एवं शाल्मली वृक्ष के परिवार सहित वृक्षों की संख्या

(१) जम्बूवृक्ष संबंधी कुल परिवार वृक्ष = १,४०,१२०
(२) शाल्मलि वृक्ष संबंधी कुल परिवार वृक्ष = १,४०,१२०
जम्बूद्वीप के कुल वृक्ष = २,८०,२४०

दो लाख अस्सी हजार दो सौ चालीस

धातकीखण्डद्वीप

पूर्व धातकीखण्ड

(१) धातकी वृक्ष संबंधी कुल वृक्ष = २८०२४०
(२) शाल्मलि वृक्ष संबंधी कुल वृक्ष = २८०२४०
कुल मिलाकर = २,८०, २,८०,२४० = ५,६०,४८० वृक्ष

पश्चिम धातकी खण्ड

(१) धातकी वृक्ष संबधी कुल वृक्ष = २८०२४०
(२) शाल्मलि वृक्ष संबंधी कुल वृक्ष =२८०२४०
कुल मिलाकर = २,८०, २,८०,२४० = ५,६०,४८० वृक्ष
धातकी खण्ड संबंधी कुल वृक्ष =२,८०,२४० + २,८०,२४० + २,८०,२४० + २,८०,२४० = ११,२०,९६०

ग्यारह लाख बीस हजार नौ सौ साठ

पुष्करार्धद्वीप

पूर्व पुष्करार्ध द्वीप

(१) पुष्करवृक्ष संबंधी कुल वृक्ष = ५,६०,४८०
(२) शाल्मलिवृक्ष संबंधी कुल वृक्ष = ५,६०,४८०
कुल योग = ११,२०,९६०

पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप

(१) पुष्करवृक्ष संबंधी कुल परिवार वृक्ष = ५,६०,४८०
(२) शाल्मलिवृक्ष संबंधी कुल पीरवार वृक्ष = ५,६०,४८०
कुल योग = ११,२०,९६०

पुष्करार्धद्वीप संबंधी कुल वृक्ष = ५,६०,४८०+ ५,६०,४८० + ५,६०,४८० + ५,६०,४८० = २२,४१,९२०

बाईस लाख इकतालीस हजार नौ सौ बीस

ढाई द्वीप के कुल वृक्ष

२,८०,२४० +११,२०,९६०+ २२,४१,९२० =३६,४३,१२०

छत्तीस लाख तैतालीस हजार एक सौ बीस वृक्ष

ये जितने वृक्ष हैं उतने ही जिनमंदिर हैं। इन सभी अकृत्रिम जिनमंदिर और उनमें विराजमान जिन-प्रतिमाओं को मेरा कोटि-कोटि नमस्कार होवे।

-प्रशस्ति-

वीर अब्द पच्चीस सौ-अड़तीस आश्विन मास।
शरदपूर्णिमा शुभ तिथी, पाया ज्ञान प्रकाश।।१।।

जम्बूवृक्षादिक कहे, शाश्वत वृक्ष महान्।
इनमें जिनमंदिर नमूँ बनूँ स्वात्मनिधिमान्।।२।।

ग्रन्थ पूर्णता प्राप्त यह, करे भव्य मन वास।
तब तक यह जग में रहे, जब तक रवि आकाश।।३।।

समाप्तम्